# इतिहास और नागरिक शास्त्र

## सातवीं कक्षा

अटक

दिल्ली

कटक

रायगढ़

जिंजी

तंजावुर

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

# इतिहास और नागरिक शास्त्र

## सातवीं कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

संलग्न 'क्यू आर कोड' तथा इस पुस्तक में अन्य स्थानों पर दिए गए 'क्यू आर कोड' स्मार्ट फोन का प्रयोग कर स्कैन कर सकते हैं। स्कैन करने के उपरांत आपको इस पाठ्यपुस्तक के अध्ययन-अध्यापन के लिए उपयुक्त लिंक/लिंक्स (URL) प्राप्त होंगी।

प्रथमावृत्ति : २०१७

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

**इतिहास विषय समिति**

डॉ. सदानंद मोरे, अध्यक्ष
श्री मोहन शेटे, सदस्य
श्री पांडुरंग बलकवडे, सदस्य
डॉ. अभिराम दीक्षित, सदस्य
श्री बापूसाहेब शिंदे, सदस्य
श्री बाळकृष्ण चोपडे, सदस्य
श्री प्रशांत सरूडकर, सदस्य
श्री मोगल जाधव, सदस्य-सचिव

**नागरिक शास्त्र विषय समिति**

डॉ. श्रीकांत परांजपे, अध्यक्ष
प्रा. साधना कुलकर्णी, सदस्य
डॉ. मोहन काशीकर, सदस्य
श्री वैजनाथ काळे, सदस्य
श्री मोगल जाधव, सदस्य-सचिव

**लेखिका**

डॉ.शुभांगना अत्रे
प्रा.साधना कुलकर्णी

**भाषांतरकार**

प्रा.शशि मुरलीधर निघोजकर

**समीक्षक**

डॉ.प्रमोद शुक्ल

**भाषांतर संयोजन**

डॉ. अलका पोतदार
विशेषाधिकारी, हिंदी

**संयोजन सहायक**

सौ.संध्या वि. उपासनी
विषय सहायक, हिंदी

**निमंत्रित**

डॉ.सोमनाथ रोडे
डॉ.गणेश राऊत

**मुखपृष्ठ एवं सजावट**

श्री देवदत्त प्रकाश बलकवडे

**मानचित्रकार**

श्री रविकिरण जाधव

**अक्षरांकन**

मुद्रा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

**कागज**

७० जी.एस.एम. क्रिमवोव

**मुद्रणादेश**

N/PB/2017-18/QTY.- 0.25

**मुद्रक**

M/s. KALYANI CORPORATION, PUNE

**इतिहास और नागरिक शास्त्र अभ्यास गट**

श्री राहुल प्रभू
श्री संजय वझरेकर
श्री सुभाष राठोड
सौ. सुनीता दळवी
प्रा शिवानी लिमये
श्री भाऊसाहेब उमाटे
डॉ. नागनाथ येवले
श्री सदानंद डोंगरे
श्री रवींद्र पाटील
श्री विक्रम अडसूळ
सौ. रूपाली गिरकर
डॉ. मिनाक्षी उपाध्याय
सौ. कांचन केतकर
सौ. शिवकन्या पटवे
डॉ. अनिल सिंगारे
डॉ. रावसाहेब शेळके
श्री मरीबा चंदनशिवे
श्री संतोष शिंदे
डॉ सतीश चापले
श्री विशाल कुलकर्णी
श्री शेखर पाटील
श्री संजय मेहता
श्री रामदास ठाकर
डॉ. अजित आपटे
डॉ. मोहन खडसे
सौ. शिवकन्या कदेरकर
श्री गौतम डांगे
डॉ. व्यंकटेश खरात
श्री रविंद्र जिंदे
डॉ. प्रभाकर लोंढे

**संयोजक**

श्री मोगल जाधव
विशेषाधिकारी, इतिहास व नागरिकशास्त्र
सौ. वर्षा सरोदे
विषय सहायक, इतिहास व नागरिकशास्त्र
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे.

**निर्मिति**

श्री सच्चितानंद आफळे,
मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री प्रभाकर परब,
निर्मिति अधिकारी
श्री शशांक कणिकदळे,
सहायक निर्मिति अधिकारी

**प्रकाशक**

श्री विवेक उत्तम गोसावी, नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई-२५

# भारत का संविधान

## उद्देशिका

**हम, भारत के लोग,** भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

## राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

## प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

# प्रस्तावना

विद्यार्थी मित्रो,

तीसरी से पाँचवीं कक्षा तक इतिहास और नागरिक शास्त्र विषय का अध्ययन तुमने 'परिसर अध्ययन भाग-१' एवं 'परिसर अध्ययन भाग-२' में किया है । छठी कक्षा से पाठ्यक्रम में इतिहास और नागरिक शास्त्र स्वतंत्र विषय हैं । छठी कक्षा से इन दोनों विषयों का समावेश एक ही पाठ्यपुस्तक में किया गया है । सातवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक तुम्हारे हाथों में सौंपते हुए हमें आनंद हो रहा है ।

यह विषय ठीक से समझ में आए, मनोरंजक लगे, हमारे पूर्वजों द्‌वारा किए गए कार्यों से प्रेरणा मिले; इस उद्‌देश्य से पाठ्यपुस्तक की रचना की गई है । इस पाठ्यपुस्तक के अध्ययन द्‌वारा तुम्हें ज्ञान के साथ-साथ आनंद भी प्राप्त होगा; ऐसा हमें लगता है । इस हेतु पाठ्यपुस्तक में रंगीन चित्र, मानचित्र दिए गए हैं । पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ का ध्यानपूर्वक अध्ययन करो । इसका जो भाग तुम्हारी समझ में नहीं आएगा, वह शिक्षक, अभिभावक द्‌वारा समझो । चौखटों में दी गई जानकारी तुम्हारे ज्ञान में वृद्‌धि ही करेगी ! इतिहास मनोरंजक विषय है और वह हमारा मित्र है, ऐसा मानकर यदि इस पुस्तक का अध्ययन करोगे तो निश्चित ही इतिहास के प्रति तुम्हें रुचि अनुभव होगी ।

इतिहास के भाग में 'मध्यकालीन भारत का इतिहास' दिया गया है । मध्यकालीन भारत के निर्माण में महाराष्ट्र के स्थान और भूमिका को केंद्र में रखकर पाठ्यपुस्तक की रचना की गई है । इसके द्‌वारा तुम्हें इस बात का बोध होना भी अपेक्षित है कि यदि हम भारत के नागरिक हैं तो साथ-साथ हमें कर्तव्यों का पालन भी करना चाहिए ।

नागरिक शास्त्र के भाग में भारतीय संविधान की पहचान कराई गई है । भारत के संविधान निर्माण की पृष्ठभूमि, संविधान की उद्‌देशिका और संविधान में उल्लिखित मौलिक अधिकारों और नीति निदेशक सिद्‌धांतों को प्रस्तुत किया गया है । तुम्हारा अध्ययन अधिक-से-अधिक कृतिप्रधान हो, इसके लिए उपक्रम दिए गए हैं । हम देश के भावी नागरिक हैं और हम देश का भविष्य बनाएँगे; यह बोध करते हुए ही तुम अगली कक्षा में प्रवेश करोगे ।

इतिहास के अध्ययन द्‌वारा हमें अपने पूर्वजों के पराक्रम और वीरता का ज्ञान प्राप्त होता है । इसी को नागरिक शास्त्र के अध्ययन का पुट मिल जाए तो हमारी समझ में यह भी आएगा कि देश और समाज का भविष्य निर्माण करने की दृष्टि से हमारे क्या कर्तव्य हैं । इसी के लिए यह संयुक्त अध्ययन का उपक्रम है ।

**(डॉ.सुनिल मगर)**
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

पुणे
दिनांक : २८ मार्च २०१७

## – शिक्षकों के लिए –

हमने छठी कक्षा में इतिहास और नागरिक शास्त्र विषयों की पाठ्यपुस्तकों का अध्यापन कार्य किया ही है । सातवीं कक्षा की प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में मध्यकालीन भारतीय इतिहास को प्रस्तुत किया गया है ।

इतिहास की इस प्रस्तुति की विशेषता यह है कि यह प्रस्तुति महाराष्ट्र केंद्रित है । हमारा प्रदेश यद्यपि भारतीय संघराज्य का एक अंग है फिर भी इतिहास का आकलन करते समय महाराष्ट्र की दृष्टि से अर्थात भारत के इतिहास में महाराष्ट्र का स्थान, भूमिका और उसके द्वारा दिए गए योगदान को सामने रखकर समझने का प्रयास करें तो विद्यार्थियों की राष्ट्रभावना अधिक परिपक्व होगी । हमारे पूर्वजों ने राष्ट्र के लिए निश्चित रूप से क्या किया है; इसका बोध होगा और इसी के द्वारा हमारे वर्तमान राष्ट्रीय दायित्व और कर्तव्य की अनुभूति भी अधिक विकसित होगी ।

इस संदर्भ में छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित किया गया स्वराज्य स्वाभाविक रूप से महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है । स्वराज्य निर्माण को समझने के लिए शिवाजी महाराज का उदय होने से पूर्व की भारत और महाराष्ट्र में प्रचलित परिस्थितियों का आकलन करना होगा अर्थात भारत के इतिहास का आकलन करना होगा । इसी नीति को ध्यान में रखकर पुस्तक की रचना की गई है । शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित स्वराज्य पर शिवाजी महाराज की मृत्यु के पश्चात उत्तर से हुए आक्रमणों का सामना महाराष्ट्र ने किस प्रकार किया और किस प्रकार अपने स्वराज्य की रक्षा की; इसपर विचार-विमर्श किया गया है । इन आक्रमणों को विफल बनाने के बाद मराठों ने महाराष्ट्र की सीमाओं का विस्तार किया और अधिकांश भारत व्याप्त कर लिया । स्वराज्य का साम्राज्य में रूपांतर का विवेचन; यह उसका अगला हिस्सा है । यह तो सभी को ज्ञात है कि अंग्रेजों ने भारत पर विजय पाई और यहाँ शासन भी चलाया परंतु इस प्रक्रिया में अंग्रेजों को रोकने में महाराष्ट्र किस प्रकार अग्रसर था, इसे समझना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है । अंग्रेजों की प्रतिद्वंद्विता मराठों के साथ थी और उन्होंने भारत पर विजय पाई; लेकिन इसके लिए उन्हें मराठों से युद्ध करना पड़ा । यह बोध हमारी सामर्थ्य और कर्तव्य का है । अतः अध्ययन-अध्यापन करते समय यह भावना विद्यार्थियों के मन में अंकित होना अपेक्षित है । पाठ्यपुस्तक के इस दृष्टिकोण को चित्ररूप में मुखपृष्ठ पर व्यक्त किया गया है तथा मुखपृष्ठ पर मराठी सत्ता का विस्तार दर्शाने के लिए भारत के स्थूल मानचित्र का उपयोग किया गया है ।

नागरिक शास्त्र के भाग में भारत के संविधान का परिचय कराया गया है । इस विषय को एक ही शैक्षिक वर्ष में पढ़ाना संभव नहीं है । अतः इस विषय को दो कक्षाओं में विभाजित किया गया है । इस कक्षा में संविधान की आवश्यकता, संविधान में उल्लिखित मूल्य, उद्देशिका, मौलिक अधिकार एवं कर्तव्य और नीति निदेशक सिद्धांतों जैसे घटकों पर बल दिया गया है । संविधान में उल्लिखित शासन व्यवस्था का स्वरूप और उसपर आधारित राजनीतिक प्रक्रिया का अध्ययन आठवीं कक्षा में करेंगे । इस दृष्टि से सातवीं तथा आठवीं कक्षा के नागरिक शास्त्र की विषयवस्तु एक-दूसरे की पूरक हैं । इसका आकलन विद्यार्थियों को भली-भाँति होगा और इसी दृष्टि से विषय की प्रस्तुति की गई है । विषयवस्तु की प्रस्तुति नवीनतापूर्ण ढंग से की गई है । वह ज्ञानरचनावाद पर आधारित है परंतु इसके परे जाकर राजनीतिक व्यवस्था के प्रति व्याप्त उदासीनता को दूर कर विद्यार्थियों को समाज का अंग बनाने हेतु प्राथमिकता दी गई है । विषयवस्तु की प्रस्तुति अत्यंत सरल भाषा में की गई है । इससे पाठ्यपुस्तक की पठनीयता में वृद्धि होने हेतु सहायता प्राप्त होगी ।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक का अध्यापन करते समय शिक्षक समाचारपत्रों, दूरदर्शन के समाचारों, विषयतज्ञों द्वारा किए गए विश्लेषणात्मक अध्ययन का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों में समग्र दृष्टिकोण विकसित होने हेतु सहायता करें । इतिहास और नागरिक शास्त्र का अध्ययन-अध्यापन वर्तमान घटनाओं के संदर्भ में करें तो वह कार्य अधिक सार्थक तो होगा ही परंतु इसी के साथ विद्यार्थियों को मूल्य आत्मसात करने में उनसे सहयोग प्राप्त होता है । हिंदी में व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ मूल रूप में रखी गई हैं ।

# अनुक्रमणिका

## मध्यकालीन भारत का इतिहास


| क्र. | पाठ का नाम | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| १. | इतिहास के साधन | १ |
| २. | शिवाजी महाराज से पूर्व का भारत | ५ |
| ३. | धार्मिक सौहार्द | ११ |
| ४. | शिवाजी महाराज से पूर्व का महाराष्ट्र | १४ |
| ५. | स्वराज्य की स्थापना | १९ |
| ६. | मुगलों से संघर्ष | २४ |
| ७. | स्वराज्य का प्रशासन | २९ |
| ८. | आदर्श शासक | ३३ |
| ९. | मराठों का स्वतंत्रता युद्ध | ३७ |
| १०. | मराठी सत्ता का विस्तार | ४४ |
| ११. | राष्ट्ररक्षक मराठे | ४७ |
| १२. | साम्राज्य की प्रगति | ५३ |
| १३. | महाराष्ट्र में सामाजिक जीवन | ५७ |


**S.O.I. Note :** The following foot notes are applicable : (1) © Government of India, Copyright : 2017. (2) The responsibility for the correctness of internal details rests with the publisher. (3) The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line. (4) The administrative headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh. (5) The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. 1971," but have yet to be verified. (6) The external boundaries and coastlines of India agree with the Record/Master Copy certified by Survey of India. (7) The state boundaries between Uttarakhand & Uttar Pradesh, Bihar & Jharkhand and Chattisgarh & Madhya Pradesh have not been verified by the Governments concerned. (8) The spellings of names in this map, have been taken from various sources.

# क्षमता विधान

| अ.क्र. | घटक | क्षमता |
|---|---|---|
| १. | इतिहास के साधन | – मध्यकालीन भारतीय इतिहास के साधनों को पहचानना ।<br>– ऐतिहासिक साधनों का वर्गीकरण करना ।<br>– इतिहास के लेखन में ऐतिहासिक साधनों का महत्त्व पहचानना ।<br>– ऐतिहासिक साधनों के संवर्धन हेतु प्रयत्न करना । |
| २. | शिवाजी महाराज से पूर्व का भारत | – शिवाजी महाराज से पूर्व भारत में विभिन्न सत्ताएँ थीं । उन सत्ताओं का महाराष्ट्र के सामाजिक जीवन पर हुए परिणामों को बताना ।<br>– मुगलकालीन घटनाओं के महाराष्ट्र पर हुए परिणामों को बताना । |
| ३. | शिवाजी महाराज से पूर्व का महाराष्ट्र | – शिवाजी महाराज से पूर्व के सामाजिक जीवन को स्पष्ट करना ।<br>– आदिलशाही और निजामशाही के कार्यकाल में घटित विविध ऐतिहासिक घटनाओं को स्पष्ट करना ।<br>– शिवाजी महाराज से पूर्व की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों का विश्लेषण करना । |
| ४. | स्वराज्य की स्थापना | – संतों द्‌वारा दी गई सीखों में समानता ढूँढ़ना ।<br>– स्वराज्य की स्थापना हेतु कौन-सी परिस्थिति कारण बनी; इसका विश्लेषण करना ।<br>– किलों-गढ़ों/ ऐतिहासिक स्मारकों की सैर पर जाना और जानकारी एकत्रित करना ।<br>– इंटरनेट द्‌वारा किलों की जानकारी प्राप्त करना ।<br>– ऐतिहासिक विरासत के संवर्धन हेतु प्रयास करना ।<br>– जावली की विजय के ऐतिहासिक महत्त्व को समझना ।<br>– शिवाजी महाराज के वीर साथी एक-दूसरे के लिए प्राण अर्पित करते थे; इसका बोध उत्पन्न होना । |
| ५. | मुगलों से संघर्ष | – शिवाजी महाराज की युद्‌धनीति का अध्ययन करना ।<br>– मराठा और मुगलों के बीच हुए संघर्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना ।<br>– विकट और संकटों के प्रसंगों में शिवाजी महाराज की निर्णय लेने की क्षमता और धैर्य प्रवृत्ति का अध्ययनपूर्वक विवेचन करना । |
| ६. | शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक | – शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के कारणों को स्पष्ट करना ।<br>– दक्षिण की दिग्विजय के पश्चात किए गए स्वराज्य के विस्तार को स्पष्ट करना । |
| ७. | आदर्श शासक | – स्वराज्य की जनकल्याणकारी प्रशासन व्यवस्था की जानकारी बताना ।<br>– शिवाजी महाराज की प्रशासन तथा सैनिकी व्यवस्था को स्पष्ट करना ।<br>– शिवाजी महाराज के समकालीन सत्ताधीशों की जानकारी प्राप्त करना और उनके संदर्भ में शिवाजी महाराज की महानता को पहचानना ।<br>– शिवाजी महाराज से प्रेरणा ग्रहण करना ।<br>– किलों की अनुपातबद्‌ध प्रतिकृति तैयार करना । |
| ८. | स्वतंत्रता युद्‌ध | – छत्रपति संभाजी महाराज की मृत्यु के पश्चात मराठों की राज्य प्रशासन संबंधी नीतियों में परिवर्तन होता गया; इसे स्पष्ट करना ।<br>– मराठों ने अति प्रतिकूल स्थितियों में भी राज्य को बचाए रखा; इसका बोध करना ।<br>– छत्रपति राजाराम महाराज को अपनी राजधानी जिंजी को स्थलांतरित करनी पड़ी; इसका विश्लेषण करना ।<br>– महारानी ताराबाई के कार्यों की विश्लेषणात्मक समीक्षा करना । |
| ९. | पेशवाओं का कार्यकाल और मराठी सत्ता का विस्तार | – संपूर्ण भारत में शक्तिशाली सत्ता के रूप में मराठी सत्ता का उदय हुआ; इसे तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर स्पष्ट करना ।<br>– पानीपत युद्‌ध के कारणों का विश्लेषण करना ।<br>– पेशवाओं के कार्यों की जानकारी प्राप्त करना ।<br>– मराठा सरदारों के कार्यों का महत्त्व बताना । |

# १. इतिहास के साधन

पिछले वर्ष हमने भारत के प्राचीन कालखंड का अध्ययन किया है। इस वर्ष हम मध्यकालीन कालखंड का अध्ययन करेंगे । भारतीय इतिहास में मध्यकाल मोटे तौर पर ई. स. नौवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी के अंत तक माना जाता है । इस पाठ में हम मध्यकालीन इतिहास के साधनों का अध्ययन करेंगे ।

भूतकाल में घटित घटनाओं के कालक्रम के अनुसार प्रामाणिक और वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर दी गई जानकारी को इतिहास कहते हैं।

**क्या तुम जानते हो ?**

इतिहास शब्द 'इति+ह+आस्' द्वारा निर्मित है। इस शब्द का अर्थ 'ऐसा हुआ' है।

इतिहास की दृष्टि से व्यक्ति, समाज, स्थान और काल ये चार घटक अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। इतिहास को विश्वसनीय प्रमाणों पर आधारित होना आवश्यक है। इन प्रमाणों को ही इतिहास के साधन कहते हैं।

हम इन साधनों का वर्गीकरण भौतिक साधन, लिखित साधन और मौखिक साधन में करेंगे । उनकी जानकारी प्राप्त करेंगे तथा इतिहास के इन साधनों का मूल्यांकन भी करेंगे ।

जिस ऐतिहासिक घटना का अध्ययन करना है; उससे संबंधित अनेक घटकों का विचार करना पड़ता है। इसके लिए ऐतिहासिक साधनों का आधार लेना पड़ता है। इन साधनों की जाँच-पड़ताल करना आवश्यक होता है। उनकी प्रामाणिकता और सत्यता की पड़ताल करनी पड़ती है। इन साधनों का उपयोग अत्यंत सूझ-बूझ और विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा करना आवश्यक होता है।

## भौतिक साधन

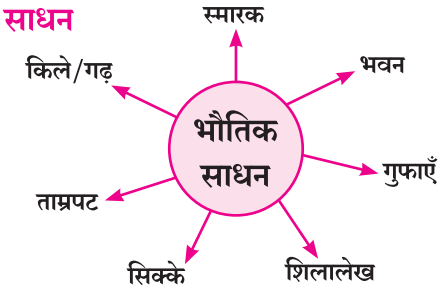


उपरोक्त वस्तुओं और भवनों अथवा उनके अवशेषों को इतिहास के 'भौतिक साधन' कहते हैं।

भौतिक साधनों में किलों अथवा गढ़ों को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। किलों अथवा गढ़ों के कुछ महत्त्वपूर्ण भेद हैं जैसे- गिरिदुर्ग, वनदुर्ग, जलदुर्ग और जमीनी किला। इसी तरह स्मारकों में समाधि, मकबरा, उकेरे हुए छोटे शिलालेख (वीरगल) तथा भवनों में-रजवाड़ा, मंत्रिनिवास, रनिवास, सामान्य लोगों के मकान आदि का समावेश होता है। इनके आधार पर हमें उस कालखंड का बोध होता है। वास्तुकला में हुई उन्नति से परिचय प्राप्त होता है। उस कालखंड की आर्थिक स्थिति, कला की ऊँचाई, निर्माणकार्य शैली और लोगों के जीवन स्तर आदि की जानकारी मिलती है।

**बताओ तो**

सिक्कों द्वारा इतिहास की जानकारी किस प्रकार प्राप्त होती है।

**समझें**

प्राचीन समय से कौड़ी, दमड़ी, धेला, पाई पैसा, आना, रुपया जैसे सिक्के प्रचलन में थे। सिक्कों के कारण कुछ कहावतें/लोकोक्तियाँ प्रचलित हुई हैं। जैसे-

* फूटी कौड़ी भी नहीं दूँगा।
* चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।
* पाई-पाई का हिसाब रखना।
* सोलह आना सच।

उकेरे हुए छोटे शिलालेख (वीरगल)

इतिहास के साधन के रूप में विभिन्न शासकों द्वारा सोना, चांदी, तांबा जैसी धातुओं का उपयोग कर ढाले गए सिक्के महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। सिक्कों के आधार पर वे शासक कौन थे, उनका कार्यकाल, उनकी शासन व्यवस्था, धार्मिक अवधारणाएँ, व्यक्तिगत विवरण आदि की जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही, आर्थिक गतिविधियों और आर्थिक स्थितियों की जानकारी मिलती है। उस कालखंड के धातुविज्ञान में हुई प्रगति ध्यान में आती है। सम्राट अकबर के सिक्कों पर अंकित राम-सीता का चित्र अथवा हैदरअली के सिक्कों पर अंकित शिव-पार्वती की प्रतिमा के आधार पर उस कालखंड में प्रचलित धार्मिक समन्वय का बोध होता है। पेशवाओं के सिक्कों पर अरबी अथवा फारसी भाषा का उपयोग किया जाता था। इससे उस कालखंड में चलने वाले भाषा व्यवहार का ज्ञान होता है।

पेशवाकालीन सिक्के

हैदरअली के सिक्के

पत्थर अथवा दीवार पर उकेरे गए लेखों को शिलालेख कहते हैं। जैसे- तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर के परिसर में उकेरे गए लेख, चालुक्य, राष्ट्रकूट, चोल और यादव शासकों के कार्यकाल में उकेरे गए अनेक शिलालेख प्राप्त हुए हैं। शिलालेख इतिहास लेखन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण और विश्वसनीय प्रमाण माना जाता है। इसके द्वारा भाषा, लिपि, समाज जीवन जैसे घटकों को समझने में सहायता प्राप्त होती है। तांबे के पत्तर पर उकेरे गए लेखों को 'ताम्रपट' कहते हैं। इन ताम्रपटों पर राजाओं के आदेश, निर्णय आदि जानकारी उकेरी हुई होती है।

**क्या तुम जानते हो ?**

चैत्य, विहार, मंदिर, गिरजाघर, मस्जिदें, अगियारी, दरगाहें, मकबरे, गुरुद्वारा, छतरी, शिल्प, विभिन्न कोणोंवाले पक्के, गहरे और बड़े कुएँ, मीनारें, ग्रामसीमाएँ, शस्त्र, बरतन, आभूषण, वस्त्र, हस्तकला की कलात्मक वस्तुएँ, खिलौने, औजार, वाद्य आदि भौतिक साधन हैं।

**लिखित साधन :** उस कालखंड की देवनागरी, अरबी, फारसी, सर्राफा (घसीटा) आदि लिपियों की बनावट तथा शैली, विभिन्न भाषाओं के रूप, भोजपत्रों, पोथियों, ग्रंथों, आदेशपत्रों, चरित्रों, चित्रों द्वारा हमें मध्यकाल की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही विविध व्यंजन, लोकजीवन, वेशभूषा, आचार-विचार, तीज-त्योहार की भी जानकारी मिलती है।

इस पूरी सामग्री को इतिहास के 'लिखित साधन' कहते हैं।

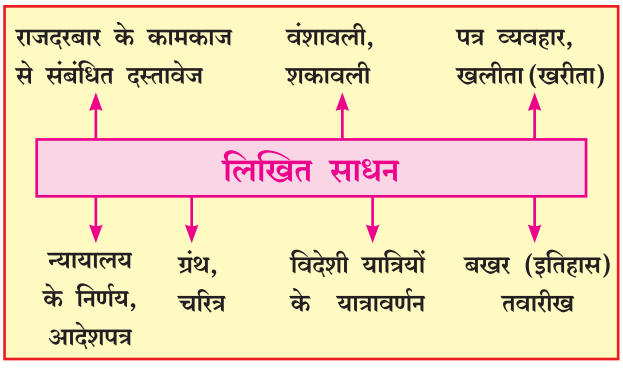

इस कालखंड में विदेशी यात्री भारत में आए। उन्होंने अपना-अपना यात्रा साहित्य लिख रखा है । उसमें अल् बैरूनी, इब्न-ए बतूता, निकोलस मनुची का समावेश होता है। बाबर का चरित्र, कवि परमानंद द्वारा संस्कृत भाषा में लिखित शिवचरित्र- 'श्रीशिवभारत' तथा विभिन्न शासकों के चरित्र एवं पत्रव्यवहार के आधार पर हम उन शासकों की नीतियों, प्रशासकीय प्रबंधन तथा राजनीतिक संबंधों को समझ सकते हैं।

तवारीख अथवा तारीख का अर्थ घटनाक्रम अथवा इतिहास होता है। अल् बैरूनी, जियाउद्दीन बरनी, मौलाना अहमद, याह्या-बिन-अहमद, मिर्जा हैदर, भीमसेन सक्सेना आदि द्वारा लिखी गई तवारीखें उपलब्ध हैं।

बखर शब्द खबर शब्द से बना है। खबर का अर्थ समाचार है । महाराष्ट्र में 'बखर' इतिहास लेखन का एक प्रकार है । बखर द्वारा तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं, भाषा व्यवहार, सांस्कृतिक जीवन, सामाजिक स्थितियों जैसे घटकों को समझने में सहायता प्राप्त होती है । मराठी में अनेक 'बखरें' घटनाएँ घटित हो जाने के कई वर्षों के बाद लिखी गई हैं । फलतः उनमें कई बार सुनी-सुनाई जानकारी पर बल दिया गया पाया जाता है। महिकावती की बखर, सभासद की बखर, एक्याण्णव कलमी बखर चिटणीस की बखर, भाऊसाहेब की बखर, खर्डा युद्ध की बखर आदि कुछ बखरें हैं। समकालीन पश्चिमी इतिहासकार रॉबर्ट आर्म, एम. सी. स्प्रेंगल और ग्रांट डफ द्वारा लिखित ग्रंथ भी महत्त्वपूर्ण हैं।

**करके देखो**

- पोवाडा, आदिवासी गीतों का संग्रह बनाओ।
- विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में उनको प्रस्तुत करो।

**मौखिक साधन :** लोकपरंपरा में पीढ़ी-दर-पीढ़ी संक्रमित होती रहीं ओवियाँ (चक्की के गीत), लोकगीत, पोवाडे, कहानियाँ, दंतकथाएँ, मिथकीय गाथाएँ आदि द्वारा हम लोकजीवन के विविध पहलुओं को समझ सकते हैं। इन साधनों को इतिहास के 'मौखिक साधन' कहते हैं ।

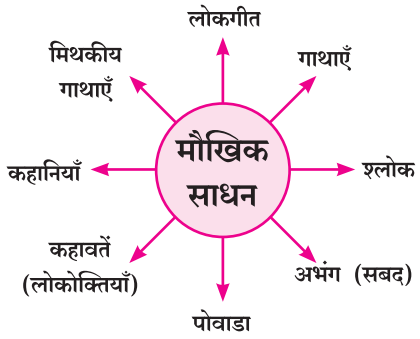


उपरोक्त तीनों प्रकारों के साधनों के आधार पर इतिहास लिखा जाता है। यद्यपि इतिहास एक बार लिखा जाए; फिर भी उस विषय से संबंधित अनुसंधान अथवा शोधकार्य निरंतर चलता रहता है। इस अनुसंधान अथवा शोधकार्य द्वारा नए साधन, नई जानकारी प्रकाश में आती है। उसके आधार पर इतिहास का पुनर्लेखन करना पड़ता है। जैसे- हमारे दादा जी-दादी जी के समय की, माता-

**क्या तुम जानते हो ?**

**तानाजी का पोवाड़ा :** इस पोवाडे के रचयिता तुलशीदास शाहीर (शौर्यकाव्य रचनाकार) हैं। इस पोवाडा में सिंहगढ़ अभियान का वर्णन मिलता है। इस पोवाडा में तानाजी, शेलार मामा, शिवाजी महाराज, वीरमाता जिजाबाई के सुंदर स्वभाव का चित्रण पाया जाता है ।

इस पोवाडे का कुछ अंश यहाँ दिया गया है ।

*मामा बोलाया तो लागला । ऐंशी वर्षींचा म्हातारा ।।*
*'' लगिन राहिले रायबाचे तो मजला सांगावी ।।*
*माझ्या तानाजी सुभेदारा । जे गेले सिंहगडाला ।।*
*त्याचे पाठिरे पाहिले । नाही पुढारे पाहिले ।।*
*ज्याने आंबारे खाईला । बाठा बुजरा लाविला ।।*
*त्याचे झाड होउनि आंबे बांधले ।*
*किल्ला हाती नाही आला ।।*
*सिंहगड किल्ल्याची वार्ता ।*
*काढू नको तानाजी सुभेदारा ।।*
*जे गेले सिंहगडाला । ते मरूनशानी गेले ।।*
*तुमचा सपाटा होईल । असे बोलू नको रे मामा ।।*
*आम्ही सूरमर्द क्षत्री । नाही भिणार मरणाला ।।''*

पिता के समय की और हमारे समय की इतिहास की पुस्तकों में थोड़ा-बहुत अंतर पाया जाता है।

**बोलना चाहिए**

ऐतिहासिक साधनों का संवर्धन करने के उपाय सुझाओ।

**ऐतिहासिक साधनों का मूल्यांकन :** इन सभी साधनों को उपयोग में लाने से पूर्व कुछ सावधानी बरतना आवश्यक होता है। उन साधनों की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता की पड़ताल करनी पड़ती है। उनमें मौलिक साधन कौन-से हैं; और जाली कौन-से हैं, उसकी खोज करनी पड़ती है । अंतर्गत प्रमाणों की पड़ताल कर उन साधनों की श्रेणी निश्चित की जाती है। लेखकों का सच-झूठ, उनके व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ण संबंध, कालखंड, राजनीतिक दबाव आदि का भी अध्ययन करना आवश्यक होता है। दी गई जानकारी सुनी-सुनाई है अथवा उन्होंने स्वयं देखी है; इसका भी महत्त्व होता है। लेखन में प्रयुक्त अतिशयोक्तियाँ, प्रतिमाएँ, प्रतीक, अलंकार आदि का भी विचार करना पड़ता है। अन्य समकालीन साधनों के साथ उस जानकारी की पड़ताल करनी पड़ती है। प्राप्त जानकारी एकांगी, विसंगतिपूर्ण और अतिशयोक्तिपूर्ण होने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। अतः उनका उपयोग सूझ-बूझ के साथ किया जाना चाहिए। इन साधनों का उपयोग सदैव विश्लेषण के पश्चात करने की सावधानी बरतनी चाहिए। इतिहास का लेखन करते समय लेखक की निष्पक्षता और तटस्थता को असाधारण महत्त्व रहता है ।

## स्वाध्याय

**१. निम्नलिखित चौखटों में छिपे ऐतिहासिक साधनों के नाम ढूँढ़कर लिखो :**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त | ता | दं | त | क | था |
| वा | क | म्र | अ | त्र | पो |
| री | ग | श्लो | प | वा | लो |
| ख | त | श | डा | ट | क |
| च | दे | ख | री | ता | गी |
| आ | शि | ला | ले | ख | त |

**२. लेखन करो :**

(१) स्मारकों में किन बातों का समावेश होता है?

(२) तवारीख किसे कहते हैं?

(३) इतिहास के लेखन कार्य में लेखक के कौन-से गुण महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं?

**३. समूह में से अलग शब्द ढूँढ़कर लिखो :**

(१) भौतिक साधन, लिखित साधन, अलिखित साधन, मौखिक साधन

(२) स्मारक, सिक्के, गुफाएँ, कहानियाँ

(३) भोजपत्र, मंदिर, ग्रंथ, चित्र

(४) ओवियाँ (सबद), तवारीखें, कहानियाँ, मिथकीय कहानियाँ

**४. अवधारणाएँ स्पष्ट करो :**

(१) भौतिक साधन

(२) लिखित साधन

(३) मौखिक साधन

**५.** क्या ऐतिहासिक साधनों का मूल्यांकन करना आवश्यक होता है ? अपने विचार लिखो ।

**६. तुम अपने विचार लिखो :**

(१) शिलालेख को इतिहास लेखन का विश्वसनीय प्रमाण माना जाता है ।

(२) मौखिक साधनों द्वारा लोकजीवन के विभिन्न पहलू ध्यान में आते हैं ।

**उपक्रम**

निकटस्थ किसी वस्तुसंग्रहालय में जाओ । जिस कालखंड के इतिहास का तुम अध्ययन कर रहे हो; उस काल के इतिहास के साधनों की जानकारी प्राप्त करो और उपक्रम कॉपी में लिखो ।

# २. शिवाजी महाराज से पूर्व का भारत

इस पाठ में हम शिवाजी महाराज से पूर्वकाल में भारत में जो विभिन्न राजसत्ताएँ थीं; उनका अध्ययन करेंगे। इस कालखंड में भारत में विभिन्न राजसत्ताएँ अस्तित्व में थीं।

आठवीं शताब्दी में बंगाल में 'पाल' विख्यात राजवंश था। मध्य भारत में गुर्जर-प्रतिहार सत्ताओं ने आंध्र, कलिंग, विदर्भ, पश्चिम काठियावाड़, कन्नौज और गुजरात तक सत्ता विस्तार किया।

उत्तर भारत के राजपूत वंशों में गहड़वाल वंश, परमार वंश महत्त्वपूर्ण थे। राजपूतों में चौहान वंश का पृथ्वीराज चौहान पराक्रमी शासक था। तराई नामक स्थान पर हुए प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी को पराजित किया। लेकिन तराई में हुए दूसरे युद्ध में मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया।

तमिलनाडु के चोल वंश के राजराज प्रथम और राजेंद्र प्रथम असाधारण महत्त्व रखते हैं। चोल शासकों ने नौसेना के बल पर मालदीव द्वीप और श्रीलंका को जीत लिया। कर्नाटक के होयसळ वंश के विष्णुवर्धन राजा ने संपूर्ण कर्नाटक को जीत लिया।

महाराष्ट्र के राष्ट्रकूट वंश के गोविंद तृतीय के कार्यकाल में राष्ट्रकूट की सत्ता कन्नौज से लेकर रामेश्वर तक फैली हुई थी। कालांतर में कृष्ण तृतीय ने इलाहाबाद तक का प्रदेश जीत लिया।

शिलाहारों के तीन वंश पश्चिम महाराष्ट्र में उदित हुए। पहला वंश कोकण में ठाणे और रायगढ़, दूसरा वंश दक्षिण कोकण पर तथा तीसरा वंश कोल्हापुर, सातारा, सांगली और बेलगाँव जिलों के कुछ हिस्सों पर राज्य कर रहे थे।

शिवाजी महाराज से पूर्व काल के अंत में महाराष्ट्र के यादवों की राजसत्ता वैभवशाली राजसत्ता मानी जाती है। यादव वंश का शासक भिल्लम पंचम की राजधानी औरंगाबाद के समीप देवगिरी में थी। उसने कृष्णा नदी के पार अपनी सत्ता का विस्तार किया।

यादवों का शासनकाल मराठी भाषा और साहित्य का स्वर्णयुग माना जाता है। इसी कालखंड में महाराष्ट्र में महानुभाव और वारकरी संप्रदायों का उदय हुआ।

## पश्चिमोत्तर दिशा में आक्रमण

यद्यपि महाराष्ट्र में राष्ट्रकूट, यादव जैसे स्थानीय घरानों की सत्ता थी फिर भी उत्तर में इन स्थितियों का लाभ पश्चिमोत्तर दिशा से आए आक्रमणकारियों ने उठाया। वहाँ की स्थानीय सत्ताओं को जीतकर अपना आधिपत्य स्थापित किया।

इस बीच की कालावधि में मध्य-पूर्व में अरब सत्ता का उदय हुआ। साम्राज्य का विस्तार करने के लिए अरब सत्ताधीश भारत की ओर मुड़े। आठवीं शताब्दी में अरब सेनानी मुहम्मद-बिन-कासम ने सिंध प्रांत पर आक्रमण किया। सिंध के दाहिर राजा के प्रतिकार को निष्फल बनाते हुए उसने सिंध प्रांत को जीता। इस आक्रमण के परिणामस्वरूप अरबों का भारत के साथ पहली बार राजनीतिक संपर्क हुआ। कालांतर में मध्य एशिया के तुर्की, अफगानी और मुगल भारत में आए और उन्होंने भारत में अपनी सत्ता स्थापित की।

ई.स. की ग्यारहवीं शताब्दी में भारत पर तुर्कियों के आक्रमण प्रारंभ हुए। वे अपनी सत्ता का विस्तार करते हुए भारत की पश्चिमोत्तर सीमा तक आ पहुँचे। गजनी का सुल्तान महमूद ने भारत पर अनेक आक्रमण किए। इन आक्रमणों में उसने मथुरा, वृंदावन, कन्नौज, सोमनाथ के संपन्न मंदिरों को लूटा और वहाँ की विपुल संपत्ति अपने साथ ले गया।

## उत्तर की सुल्तानशाही

ई.स.११७५ और ११७८ में अफगानिस्तान के गोर के सुल्तान मुहम्मद गोरी ने भारत पर आक्रमण किए। भारत में जीते हुए प्रदेश का प्रशासन चलाने के लिए उसने कुतुबुद्दीन ऐबक की नियुक्ति की।

ई.स.१२०६ में मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपने आधिपत्य में भारतीय प्रदेश का शासन स्वतंत्रतापूर्वक चलाना प्रारंभ किया। ऐबक मूलतः एक गुलाम था फिर भी वह दिल्ली का सुल्तान बना। ई.स.१२१० में उसकी मृत्यु हुई।

**क्या तुम जानते हो ?**

कुतुबुद्दीन ऐबक के पश्चात अल्तमश, रजिया, बलबन, अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद तुगलक, फिरोज तुगलक, इब्राहीम लोदी आदि सुल्तानों ने भारत पर शासन किया।

इब्राहीम लोदी अंतिम सुल्तान था। उसके स्वभाव में अनेक दोष थे। फलतः उसके अनगिनत शत्रु बने। पंजाब के सूबेदार दौलतखान लोदी ने काबुल के मुगल सत्ताधीश बाबर को इब्राहीम लोदी के विरुद्ध युद्ध के लिए आमंत्रित किया। इस युद्ध में बाबर ने इब्राहीम लोदी को पराजित किया और इसी के साथ सुल्तानशाही का अंत हो गया।

## विजयनगर राज्य

दिल्ली का सुल्तान मुहम्मद तुगलक के कार्यकाल में दिल्ली की केंद्रीय सत्ता के विरुद्ध दक्षिण में विद्रोह हुए। इसी से विजयनगर और बहमनी इन दो शक्तिशाली राज्यों का उदय हुआ।

दक्षिण भारत के दो भाई-हरिहर और बुक्का दिल्ली की सुल्तानशाही की सेवा में सरदार थे। मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में दक्षिण में राजनीतिक अस्थिरता निर्माण हो गई। हरिहर और बुक्का ने इस अस्थिरता का लाभ उठाते हुए ई.स.१३३६ में दक्षिण में विजयनगर राज्य की स्थापना की। वर्तमान कर्नाटक का 'हंपी' नगर इस राज्य की राजधानी था। हरिहर विजयनगर का प्रथम शासक बना।

हरिहर के पश्चात उसका भाई बुक्का सत्तासीन हुआ। रामेश्वर तक के प्रदेश को बुक्का अपने आधिपत्य में ले आया।

**कृष्णदेवराय :** ई. स. १५०९ में कृष्णदेवराय विजयनगर का शासक बना। उसने विजयवाड़ा और राजमहेंद्री प्रदेशों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। बहमनी सुल्तान महमूद शाह के नेतृत्व में एकत्रित हुए सुल्तानों के सैन्य संघ की उसने पराजय की। कृष्णदेवराय के कार्यकाल में विजयनगर राज्य पूर्व में कटक से लेकर पश्चिम में गोआ तक और उत्तर में रायचूर दोआब से लेकर दक्षिण में हिंद महासागर तक फैला हुआ था। ई. स. १५३० में कृष्णदेवराय की मृत्यु हुई।

कृष्णदेवराय

कृष्णदेवराय विद्वान था। उसने तेलुगु भाषा में राजनीति से संबंधित 'आमुक्तमाल्यदा' नामक ग्रंथ लिखा। उसके शासनकाल में विजयनगर में हजार राम मंदिर और विठ्ठल मंदिर का निर्माण कार्य हुआ।

कृष्णदेवराय के पश्चात विजयनगर राज्य की शक्ति घटती गई। वर्तमान कर्नाटक राज्य के तालिकोट में एक ओर आदिलशाही, निजामशाही, कुतुबशाही, बरीदशाही और दूसरी ओर विजयनगर का शासक रामराय के बीच ई.स.१५६५ में युद्ध हुआ। इस युद्ध में विजयनगर की पराजय हुई। इसके बाद विजयनगर राज्य समाप्त हुआ।

## बहमनी राज्य

मुहम्मद तुगलक के प्रभाव को उखाड़ फेंकने के लिए दक्षिण के सरदारों ने विद्रोह किया। इन सरदारों का प्रमुख हसन गंगू था। उसने दिल्ली के सुल्तान की सेना को पराजित किया और ई.स.१३४७ में नए राज्य का उदय हुआ। इसे बहमनी राज्य कहते हैं। हसन गंगू बहमनी राज्य का प्रथम सुल्तान बना। उसने कर्नाटक राज्य के 'गुलबर्गा' में अपनी राजधानी की स्थापना की।

**महमूद गवाँ :** महमूद गवाँ बहमनी राज्य का प्रमुख वजीर और उत्तम प्रशासक था । उसने बहमनी राज्य को आर्थिक रूप से सामर्थ्यशाली बनाया । सैनिकों को जागीरें देने के स्थान पर नकद वेतन देना प्रारंभ किया । सैनिकों में अनुशासन निर्माण किया । भू-राजस्व प्रणाली में सुधार किया। बीदर में अरबी और फारसी विद्याओं के अध्ययन हेतु मदरसा स्थापित किया ।

महमूद गवाँ के पश्चात बहमनी सरदारों में गुटबंदी बढ़ने लगी । विजयनगर और बहमनी राज्यों के बीच चलने वाले संघर्ष का बहमनी राज्य पर प्रतिकूल परिणाम हुआ । विभिन्न प्रांतों के अधिकारी अधिक स्वतंत्रता के साथ रहने लगे । बहमनी राज्य का विघटन हुआ और बहमनी राज्य के वऱ्हाड़ (बरार) की इमादशाही, बीदर की बरीदशाही, बीजापुर की आदिलशाही, अहमदनगर की निजामशाही और गोलकुंडा की कुतुबशाही ये पाँच खंड बने ।

## मुगल सत्ता

ई.स. १५२६ में दिल्ली की सुल्तानशाही समाप्त हुई और वहाँ मुगल सत्ता की स्थापना हुई ।

**बाबर :** बाबर मुगल सत्ता का संस्थापक था । वह मध्य एशिया में वर्तमान उजबेकिस्तान के फरगाना राज्य का शासक था । भारत की संपन्नता और संपत्ति का वर्णन उसने सुन रखा था । इसलिए उसने भारत पर आक्रमण करने की योजना बनाई ।

उस समय दिल्ली में इब्राहीम लोदी सुल्तान था और वह राज्य प्रशासन चला रहा था । सुल्तानशाही के अंतर्गत पंजाब प्रदेश में दौलतखान लोदी प्रमुख अधिकारी था । इब्राहीम लोदी तथा दौलतखान लोदी के संबंधों में संघर्ष प्रारंभ हुआ । दौलतखान ने बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया। इस अवसर का लाभ उठाते हुए बाबर ने भारत पर आक्रमण किया । बाबर के आक्रमण का प्रतिकार करने के लिए इब्राहीम लोदी अपनी सेना को लेकर चल पड़ा । २१ अप्रैल १५२६ को पानीपत में उसका बाबर के साथ युद्ध हुआ । इस युद्ध में बाबर ने भारत में पहली बार तोपखाने का प्रभावी उपयोग किया । उसने इब्राहीम लोदी की सेना को पराजित किया । यह युद्ध 'पानीपत का प्रथम युद्ध' था ।

इस युद्ध के बाद मेवाड़ के राणा सांगा ने राजपूत राजाओं को एकत्रित किया । बाबर और राणा सांगा के बीच खानुआ नामक स्थान पर युद्ध हुआ । इस युद्ध में बाबर के तोपखाना और आरक्षित सेना ने प्रभावशाली कार्य किया । राणा सांगा की सेना हार गई । ई.स.१५३० में बाबर की मृत्यु हुई ।

**क्या तुम जानते हो ?**

बाबर के बाद हुमायूँ (ई.स. १५३० से ई.स.१५३९ और ई.स.१५५५ से ई.स.१५५६) गद्दी पर बैठा । हुमायूँ के कार्यकाल में शेरशाह ने उसको पराजित किया और दिल्ली के सिंहासन पर सूर वंश की स्थापना की । हुमायूँ के पश्चात अकबर (ई.स.१५५६ से १६०५) सत्तासीन हुआ । ई.स.१५५६ में अकबर और हेमू के बीच पानीपत में युद्ध हुआ । यह पानीपत का द्वितीय युद्ध था । अकबर संपूर्ण भारत को अपने अधीन लाने की महत्त्वाकांक्षा रखता था । अकबर के बाद जहाँगीर (ई.स.१६०५ से ई.स.१६२८) शासक बना । उसके कार्यकाल में उसकी पत्नी नूरजहाँ ने प्रभावी ढंग से शासन चलाया । जहाँगीर के पश्चात शाहजहाँ (ई.स.१६२८ से १६५८) गद्दी पर बैठा । शाहजहाँ के बाद औरंगजेब (ई.स.१६५८ से ई.स.१७०७) दीर्घ अवधि तक शासक बना । उसकी मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य चरमरा गया।

अकबर मुगल वंश में सबसे अधिक पराक्रमी और कार्यक्षम शासक था । अकबर ने संपूर्ण भारत को अपने छत्र के नीचे लाने का प्रयास किया । इस प्रयास में उसको विरोध हुआ । महाराणा प्रताप,

चांदबीबी, रानी दुर्गावती द्वारा अकबर के विरुद्ध किया गया संघर्ष उल्लेखनीय है ।

**महाराणा प्रताप :** उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात महाराणा प्रताप मेवाड़ के सिंहासन पर बैठा । उसने मेवाड़ के अस्तित्व को जीवित रखने के लिए संघर्ष जारी रखा । महाराणा प्रताप ने मेवाड़ की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखने के लिए अकबर के साथ अंत तक संघर्ष किया । महाराणा प्रताप अपनी वीरता, धैर्य, आत्मसम्मान, त्याग आदि गुणों के कारण इतिहास में अमर बना ।

राणा प्रताप

**चांदबीबी :** ई.स.१५९५ में मुगलों ने निजामशाही की राजधानी अहमदनगर पर आक्रमण किया । मुगल सेना ने अहमदनगर के किले को घेर लिया । अहमदनगर के हुसैन निजामशाह की पराक्रमी बेटी चांदबीबी ने वीरतापूर्वक युद्ध किया । उस समय निजामशाही के सरदारों में फूट पैदा हुई । इस फूट का परिणाम चांदबीबी की हत्या में हुआ। कालांतर में मुगलों ने अहमदनगर का किला जीत लिया परंतु निजामशाही का संपूर्ण राज्य मुगलों के हाथ में नहीं आया ।

चांदबीबी

**रानी दुर्गावती :** विदर्भ का पूर्वी क्षेत्र, उसके उत्तर का मध्य प्रदेश का क्षेत्र, वर्तमान छत्तीसगढ़ का पश्चिमी क्षेत्र, आंध्र प्रदेश का उत्तरी हिस्सा और ओडिशा का पश्चिमी क्षेत्र मोटे तौर पर गोंडवाना का विस्तार है । चंदेल राजपूत के वंश में जन्मी दुर्गावती विवाह के पश्चात गोंडवाना की रानी बनी । उसने उत्तम पद्धति से शासन चलाया । मध्यकालीन इतिहास में रानी दुर्गावती द्वारा मुगलों के विरुद्ध किया गया युद्ध अपना अलग महत्त्व रखता है । दुर्गावती ने अपने पति की मृत्यु के बाद अकबर के साथ युद्ध करते हुए वीरगति पाई परंतु घुटने नहीं टेके ।

रानी दुर्गावती

**औरंगजेब :** ई.स.१६५८ में औरंगजेब शासक बना । उस समय मुगल साम्राज्य उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में अहमदनगर तक और पश्चिम में काबुल से पूर्व में बंगाल तक फैला हुआ था । औरंगजेब ने अपने शासनकाल में पूर्व में असम, दक्षिण में बीजापुर की आदिलशाही तथा गोलकुंडा की कुतुबशाही को नष्ट करके उनके प्रदेश अपने साम्राज्य में मिला लिए ।

औरंगजेब

**आहोमों के साथ संघर्ष :** ई.स. की तेरहवीं शताब्दी में शान समाज के लोग ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी में स्थायी रूप में बस गए । वहाँ इन लोगों ने अपना राज्य स्थापित किया । स्थानीय लोग इन लोगों को आहोम कहते थे ।

औरंगजेब के कार्यकाल में आहोम और मुगलों के बीच दीर्घकाल तक संघर्ष चला । मुगलों ने आहोमों के प्रदेश पर आक्रमण किया । सभी आहोम गदाधर सिंह के नेतृत्व में संगठित हुए । लाच्छित बड़फूकन नामक सेनानी ने मुगलों के विरुद्ध प्रखर संघर्ष किया । मुगलों के विरुद्ध युद्ध में आहोमों ने गुरिल्ला युद्ध प्रणाली (छापामार युद्ध) का अवलंब किया । असम में अपनी सत्ता को दृढ़ करना मुगलों के लिए असंभव हुआ ।

**सिखों के साथ संघर्ष :** सिखों के नौवें धर्मगुरु गुरु तेगबहादुर थे । उन्होंने औरंगजेब की धार्मिक

कट्टरता की नीति के विरुद्ध अपना विरोध जताया । औरंगजेब ने उन्हें बंदी बनाया और १६७५ ई.स. में उनका सिर कटवा दिया । उनके पश्चात गुरु गोविंद सिंह सिखों के गुरु बने ।

गुरु गोविंद सिंह ने अपने अनुयायियों को संगठित कर उनके भीतर की वीरता को प्रेरित किया । उन्होंने योद्धा सिख युवाओं का एक दल स्थापित किया । इस दल को 'खालसा दल' कहते हैं । आनंदपुर उनका प्रमुख केंद्र था । औरंगजेब ने सिखों के विरुद्ध सेना भेजी । उसकी सेना ने आनंदपुर पर आक्रमण किया । इस समय सिखों ने प्रखर संघर्ष किया परंतु उन्हें सफलता नहीं मिली । इसके बाद गुरु गोविंद सिंह दक्षिण में आए और नांदेड में निवास करने लगे । ई.स.१७०८ में उनपर आक्रमण हुआ । इसी हमले के फलस्वरूप कालांतर में उनकी मृत्यु हुई ।

गुरु गोविंद सिंह

**राजपूतों के साथ संघर्ष :** अकबर ने अपनी सौहार्दपूर्ण नीति से राजपूतों का सहयोग प्राप्त किया था परंतु राजपूतों का वैसा सहयोग औरंगजेब प्राप्त नहीं कर सका । मारवाड़ के राणा जसवंत सिंह की मृत्यु के पश्चात उसके राज्य को औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य में मिला लिया । दुर्गादास राठौर ने जसवंत सिंह के अल्पायु बेटे अजित सिंह को मारवाड़ की गद्दी पर बिठाया । दुर्गादास राठौर ने मुगलों के विरुद्ध जबरदस्त संघर्ष किया । दुर्गादास के इस विरोध को समाप्त करने के लिए औरंगजेब ने राजपुत्र अकबर को मारवाड़ भेजा । राजपुत्र अकबर स्वयं राजपूतों से जा मिला और उसने औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह किया । इस विद्रोह में महाराष्ट्र के मराठों से भी सहायता लेने का प्रयास हुआ । मारवाड़ का अस्तित्व बनाए रखने के लिए दुर्गादास राठौर ने मुगलों के विरुद्ध इस संघर्ष को जारी रखा ।

**मराठों के साथ संघर्ष :** महाराष्ट्र में शिवाजी महाराज के नेतृत्व में स्वराज्य की स्थापना हुई । स्वराज्य स्थापना के लिए उनके द्वारा किए गए इस प्रयास में उन्हें अन्य शत्रुओं के साथ मुगलों से भी संघर्ष करना पड़ा । उनकी मृत्यु के पश्चात औरंगजेब संपूर्ण दक्षिण भारत को जीतने के उद्देश्य से दक्षिण में आया परंतु मराठों ने औरंगजेब के साथ प्रखर संघर्ष किया और अपनी स्वतंत्रता की रक्षा की । इस संपूर्ण संघर्ष की जानकारी हम आगे चलकर लेंगे ।

## स्वाध्याय

**१. नाम बताओ :**

(१) गोंडवाना की रानी –
(२) उदयसिंह का पुत्र –
(३) मुगल सत्ता का संस्थापक –
(४) बहमनी राज्य का प्रथम सुल्तान –
(५) गुरु गोविंद सिंह द्वारा स्थापित दल –

**२. समूह से अलग विकल्प चुनो :**

(१) सुल्तान मुहम्मद, कुतुबुद्दीन ऐबक, मुहम्मद गोरी, बाबर
(२) आदिलशाही, निजामशाही, सुल्तानशाही, बरीदशाही
(३) अकबर, हुमायूँ, शेरशाह, औरंगजेब

**३. संक्षेप में उत्तर लिखो :**

(१) विजयनगर और बहमनी राज्यों का उदय क्यों हुआ ?
(२) महमूद गवाँ ने कौन-से सुधार किए ?
(३) असम में अपनी सत्ता को सुदृढ़ करना मुगलों के लिए क्यों असंभव हुआ ?

**४. अपने शब्दों में संक्षेप में जानकारी लिखो :**

(१) कृष्णदेवराय
(२) चांदबीबी
(३) रानी दुर्गावती

**५. कारण सहित लिखो :**

(१) बहमनी राज्य के पाँच खंड हो गए ।

(२) राणा सांगा की सेना की पराजय हुई ।

(३) राणा प्रताप इतिहास में अमर हुआ ।

(४) औरंगजेब ने गुरु तेगबहादुर को बंदी बनाया।

(५) राजपूतों ने मुगलों के विरुद्ध संघर्ष किया।

**६. कालरेखा पूर्ण करो :**

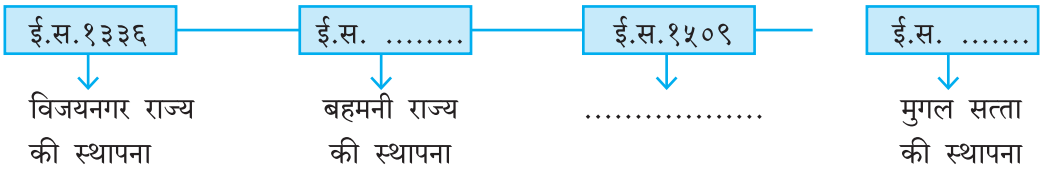


**७. इंटरनेट की सहायता से किसी भी उस व्यक्ति की जानकारी प्राप्त करो; जो तुम्हें अच्छा लगता है और वह जानकारी निम्न चौखट में लिखो :**

मुझे यह मालूम है

**उपक्रम**

पाठ में आए हुए व्यक्तियों के विषय में अधिक जानकारी संदर्भ पुस्तकों, इंटरनेट, समाचारपत्रों की सहायता से प्राप्त करो । उपक्रम कॉपी में चित्र – जानकारी का कोलाज बनाओ और इतिहास की कक्षा में उसकी प्रदर्शनी का आयोजन करो ।

देवगिरी का किला

# ३. धार्मिक सौहार्द

भाषा और धर्म में पाई जानेवाली विविधता भारतीय समाज की महत्त्वपूर्ण विशेषता है । इसी विशेषता को ध्यान में रखकर भारतीय संविधान द्‌वारा सर्वधर्म समभाव सिद्‌धांत को स्वीकारा गया है । मध्यकालीन भारतीय समाज जीवन में भी इसी सिद्‌धांत के आधार पर धार्मिक सौहार्द के प्रयास हुए थे । इन प्रयासों में भक्ति आंदोलन, सिख धर्म और सूफी पंथ का हमारे समाज में विशिष्ट स्थान है । ये विचारधाराएँ भारत के अलग-अलग प्रदेशों में निर्माण हुईं । उन्होंने ईश्वर की भक्ति के साथ-साथ धार्मिक और सांप्रदायिक समरसता पर बल दिया । इस पाठ में हम इस विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त करेंगे ।

भारतीय धर्म जीवन में प्रारंभ में कर्मकांड और ब्रह्मज्ञान पर विशेष बल दिया जाता था । मध्यकाल में ये दोनों धाराएँ पीछे रह गईं और भक्तिमार्ग को महत्त्व प्राप्त हुआ । इस मार्ग में अधिकार को लेकर निरर्थक भेदभाव नहीं था । फलस्वरूप धार्मिक सौहार्द को अधिक बल मिला । भारत के अलग-अलग प्रांतों में स्थानीय परिस्थिति का अनुसरण कर भक्तिमार्ग के अलग-अलग पंथों का उदय हुआ । भक्तिमार्ग ने संस्कृत भाषा के स्थान पर सामान्य लोगों की भाषाओं का अवलंब किया । परिणामत: प्रादेशिक भाषाओं के विकास में इन धार्मिक आंदोलनों का बहुत बड़ा सहयोग प्राप्त हुआ ।

**भक्ति आंदोलन :** ऐसा माना जाता है कि भक्ति आंदोलन का उद्‌गम दक्षिण भारत में हुआ । इस क्षेत्र में नयन्नार और आलवार भक्ति आंदोलनों का उदय हुआ । नयन्नार शिवभक्त थे तो आलवार विष्णुभक्त थे । शिव और विष्णु एक ही हैं; यह मानकर उनके बीच समन्वय स्थापित करने के प्रयास भी हुए । भगवान विष्णु का आधा हिस्सा और आधा हिस्सा भगवान शिव का दर्शाकर 'हरिहर' के रूप में बड़ी मात्रा में मूर्तियों का निर्माण करवाया गया । इस भक्ति आंदोलन में समाज के सभी वर्गों के लोग सहभागी हुए थे । इस आंदोलन द्‌वारा ईश्वर प्रेम, मानवता, प्राणिमात्र के प्रति करुणा आदि मूल्यों की सीख प्राप्त हुई । दक्षिण भारत में रामानुज और अन्य आचार्यों ने भक्ति आंदोलन की नींव सुदृढ़ की । उन्होंने कहा, ''ईश्वर सभी का है । ईश्वर भेदभाव नहीं करता ।'' उत्तर भारत में भी रामानुज की सीख का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा ।

उत्तर भारत में संत रामानंद ने भक्ति का महत्त्व प्रतिपादित किया । संत कबीर भक्ति आंदोलन के विख्यात संत थे । उन्होंने तीर्थस्थानों, व्रतों, मूर्तिपूजा को महत्त्व नहीं दिया । सत्य को ही ईश्वर माना । सभी मानव एक हैं, यह सीख दी । उन्हें जातिभेद, पंथभेद, धर्मभेद मान्य नहीं थे । वे हिंदू-मुस्लिमों के बीच एकता स्थापित करना चाहते थे । उन्होंने हिंदू और मुस्लिम धर्मों के कट्टर लोगों को कड़े शब्दों में फटकारा ।

संत कबीर

बंगाल में महाप्रभु चैतन्य ने कृष्णभक्ति का महत्त्व स्पष्ट किया । उनके उपदेशों के कारण लोग जाति और पंथ के बंधन लांघकर भक्ति आंदोलन में सम्मिलित हुए । महाप्रभु चैतन्य के प्रभाव से शंकरदेव ने असम में कृष्णभक्ति का प्रसार किया । गुजरात में संत नरसी मेहता प्रसिद्‌ध वैष्णव संत हुए । वे परम कोटि के कृष्णभक्त थे । उन्होंने समता का संदेश दिया। उन्हें गुजराती भाषा का आदि कवि माना जाता है ।

संत मीराबाई ने कृष्णभक्ति की महिमा प्रतिपादित की । वे मेवाड़ के राजवंश से संबंधित थीं। राजवंश के सभी सुखों का त्याग कर वे कृष्णभक्ति में तल्लीन हो गईं । उन्होंने गुजराती और राजस्थानी

भाषाओं में भक्ति पदों की रचना कीं । उनके भक्तिगीत भक्ति, सहिष्णुता और मानवता का संदेश देते हैं । संत रोहिदास एक महान संत थे। उन्होंने समता और मानवता का संदेश दिया । संत सेना भी प्रभावी संत थे । हिंदी साहित्य के महाकवि सूरदास ने 'सूरसागर' काव्य की रचना की । कृष्णभक्ति उनके काव्य का विषय है । मुस्लिम संत रसखान द्‌वारा लिखित कृष्णभक्ति की रचनाएँ मधुरता से परिपूर्ण हैं । संत तुलसीदास द्‌वारा लिखित 'रामचरितमानस' ग्रंथ में रामभक्ति की सुंदर अभिव्यक्ति पाई जाती है ।

कर्नाटक में श्री बसवेश्वर ने लिंगायत विचारधारा का प्रसार किया । उन्होंने जातिभेद का विरोध किया और श्रमप्रतिष्ठा का महत्त्व समझाया । उनका 'कायकवे कैलास' यह वचन प्रसिद्‌ध है । इस वचन का अर्थ है - श्रम ही कैलाश है । उन्होंने अपने आंदोलन में स्त्रियों को भी सम्मिलित करवाया । 'अनुभवमंटप' सभागृह में धर्म से संबंधित विचार-विमर्श गोष्ठियाँ होती थीं । इनमें सभी जातियों के स्त्री-पुरुष सहभागी होने लगे । उन्होंने अपनी सीख लोकभाषा कन्नड़ में वचन साहित्य के माध्यम से दी । उनके कार्यों का समाज पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा । श्री बसवेश्वर के अनुयायियों ने मराठी भाषा में भी रचनाएँ की हैं । उनमें मन्मथ स्वामी का लिखा 'परमरहस्य' ग्रंथ प्रसिद्‌ध है । कर्नाटक में पंप, पुरंदरदास आदि महान संत हुए । उन्होंने कन्नड़ भाषा में असंख्य भक्तिपदों को रचा ।

श्री बसवेश्वर

**महानुभाव पंथ :** तेरहवीं शताब्दी में चक्रधर स्वामी ने महाराष्ट्र में 'महानुभाव' पंथ की स्थापना की । यह पंथ कृष्णभक्ति की सीख देता है । श्रीगोविंद प्रभु चक्रधर स्वामी के गुरु थे । चक्रधर स्वामी के शिष्यों में सभी जातियों के स्त्री-पुरुषों का समावेश था । वे समता के समर्थक थे । उन्होंने संपूर्ण महाराष्ट्र में भ्रमण करके मराठी में उपदेश किया । संस्कृत भाषा के स्थान पर मराठी भाषा को प्राथमिकता दी । फलत: मराठी भाषा का विकास हुआ । मराठी भाषा में विपुल ग्रंथ लिखे गए ।

चक्रधर स्वामी

महाराष्ट्र में इस पंथ का प्रचार-प्रसार प्रमुखत: विदर्भ और मराठवाडा क्षेत्र में हुआ । विदर्भ में ऋद्‌धिपुर नामक स्थान इस पंथ का महत्त्वपूर्ण केंद्र है । यह पंथ पंजाब, अफगानिस्तान जैसे दूरस्थ प्रदेशों में भी पहुँचा था ।

**क्या तुम जानते हो ?**

महानुभाव पंथ के अनुयायियों द्‌वारा रचित कुछ रचनाएँ इस प्रकार हैं - म्हाइंभट द्‌वारा संपादित चक्रधर की लीलाओं का वर्णन करनेवाला 'लीलाचरित्र' ग्रंथ, आदि मराठी कवयित्री महदंबा का 'धवले', केशोबास द्‌वारा संपादित 'सूत्रपाठ' और 'दृष्टांतपाठ', दामोदर पंडित का 'वच्छाहरण', भास्कर भट्‌ट बोरीकर का 'शिशुपाल वध' और नरेंद्र का 'रुक्मिणी स्वयंवर' ।

**क्या तुम जानते हो ?**

महाराष्ट्र में संत एकनाथ द्‌वारा हिंदू-मुसलमान के बीच लिखा संवाद है । यह संवाद धार्मिक सौहार्द की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है । संत शेख महंमद का प्रसिद्‌ध वचन है 'शेख महंमद अविंध । त्याचे हृदयी गोविंद ।।' यह वचन धार्मिक समन्वय का एक उत्तम उदाहरण है ।

**गुरु नानक :** गुरु नानक सिख धर्म के प्रवर्तक और प्रथम गुरु थे । उनके कार्यों का उल्लेख धार्मिक

गुरु नानक

समन्वय के बहुत बड़े प्रयास के रूप में करना चाहिए । वे हिंदू और मुस्लिम धर्मों के तीर्थस्थानों पर गए । वे मक्का भी गए थे । भक्ति भाव सभी ओर एक जैसा है; यह बात उनके ध्यान में आई । उन्होंने सीख दी कि सबके साथ एक जैसा आचरण करो । हिंदू और मुस्लिमों के बीच एकता स्थापित करने हेतु उन्होंने उपदेश किए । वे शुद्ध आचरण पर बल देते थे ।

गुरु नानक के उपदेशों से लोग प्रभावित हो गए । उनके शिष्यों की संख्या दिन-प्रति-दिन बढ़ती गई । गुरु नानक के अनुयायियों को शिष्य अर्थात 'सिख' कहते हैं । 'गुरु ग्रंथसाहिब' सिखों का पवित्र ग्रंथ है । इस ग्रंथ में स्वयं गुरु नानक, संत नामदेव, संत कबीर आदि संतों की रचनाओं का समावेश है ।

गुरु नानक के पश्चात सिखों के नौ गुरु हुए । गुरु गोविंद सिंह सिखों के दसवें गुरु थे । उनके पश्चात सभी सिख गुरु गोविंद सिंह के आदेश के अनुसार धर्मग्रंथ 'गुरु ग्रंथसाहिब' को ही गुरु मानने लगे ।

**सूफी पंथ :** इस्लाम में सूफी संप्रदाय एक पंथ है । सूफी संतों की यह श्रद्धा थी कि ईश्वर प्रेममय है । प्रेम और भक्ति के मार्ग पर चलकर ही ईश्वर के पास पहुँचा जा सकता है । सभी प्राणिमात्रों के प्रति प्रेम हो, ईश्वर का स्मरण करें, सादगी से रहें; यह सीख सूफी संतों ने दी । ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, शेख निजामउद्दीन औलिया महान सूफी संत थे । सूफी संतों के उपदेशों के कारण हिंदू-मुस्लिम समाज में सौहार्द स्थापित हुआ । भारतीय संगीत में सूफी संगीत परंपरा का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

संतों के बताए हुए भक्ति मार्ग पर चलते हुए आचरण करना सामान्य लोगों के लिए आसान था । भक्ति आंदोलन में सभी स्त्री-पुरुषों को प्रवेश था । संतों ने अपने विचार लोकभाषा में बताए । वे विचार सामान्य लोगों को अपने लगे । भारतीय संस्कृति के निर्माण और संरचना प्रक्रिया में भक्तिमार्ग का बहुत बड़ा योगदान रहा है ।

## स्वाध्याय

**१. परस्पर संबंध ढूँढ़कर लिखो :**

(१) श्री बसवेश्वर : कर्नाटक, मीराबाई : .....

(२) रामानंद : उत्तर भारत, महाप्रभु चैतन्य : .....

(३) चक्रधर : ..... , शंकरदेव : .....

**२. निम्न तालिका पूर्ण करो :**

| | प्रसारक | ग्रंथ |
|---|---|---|
| (१) भक्ति आंदोलन | ------- | ------- |
| (२) महानुभाव पंथ | ------- | ------- |
| (३) सिख धर्म | ------- | ------- |

**३. लेखन करो :**

(१) भक्ति आंदोलन में संत कबीर विख्यात संत के रूप में उदित हुए ।

(२) संत बसवेश्वर के कार्यों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा ?

**४. निम्न चौखटों में छिपे संतों के नाम ढूँढ़ो ।**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गु | रु | गो | विं | द | सिं | ह | स | स |
| रु | रा | मा | नं | द | सू | र | दा | स |
| ना | से | त | सं | च | ल | र | ही | पं |
| न | च | स | क्र | त | द | बी | र | प |
| क | म | ध | ब | स | वे | श्व | र | क |
| ब | र | स | पु | अ | प्र | थ | म | बी |
| म | न्म | थ | स्वा | मी | रा | बा | ई | र |

**उपक्रम**

सूफी संगीत परंपरा की कोई रचना प्राप्त करो और उसे सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुत करो ।

# ४. शिवाजी महाराज से पूर्व का महाराष्ट्र

सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में महाराष्ट्र का अधिकांश प्रदेश अहमदनगर के निजामशाह और बीजापुर के आदिलशाह के आधिपत्य में था । मुगलों का खान्देश में प्रवेश हो चुका था । उनका उद्देश्य दक्षिण में अपना सत्ता विस्तार करना था । कोकण के तटों पर अफ्रीका से आए हुए सिद्दी लोगों ने अपनी बस्तियाँ बसाई थीं । इसी कालखंड में यूरोप से आए हुए पुर्तगाली, अंग्रेज, फ्रांसीसी और डच आदि विदेशी सत्ताओं के बीच समुद्री प्रतिद्वंद्विता और पारस्परिक संघर्ष प्रखर होता जा रहा था । उनके बीच व्यापार के लिए बाजार पर अपना नियंत्रण पाने के लिए होड़ मची थी । पश्चिमी तट पर गोआ और वसई में पुर्तगालियों ने पहले से ही अपना राज्य स्थापित किया था तो अंग्रेजों, डचों और फ्रांसीसियों ने व्यापारिक कंपनियों के माध्यम से गोदामों के रूप में चंचुप्रवेश किया था । ये सभी सत्ताएँ एक-दूसरे की शक्ति का अनुमान करती हुई स्वयं को सुरक्षित रखने का प्रयास कर रही थीं । साथ ही; जितना संभव होगा; उतना अपना वर्चस्व बनाए रखने की योजना में भी लगी हुई थीं । उनके इस पारस्परिक संघर्ष के कारण महाराष्ट्र में अस्थिरता और असुरक्षितता निर्माण हुई थी । यूरोप के इन अलग-अलग लोगों को उनके टोपों के कारण 'टोपकर' अर्थात 'टोपावाला' कहते थे ।

शिवाजी महाराज से पूर्व के समय में लोगों की बस्ती, प्रजा और शासक के बीच अधिकारी, बाजार-हाट, कारीगर आदि सेतु का कार्य करते थे । इनका स्वरूप समझने के लिए गाँव (मौजा), कस्बा (कसबा) और परगना जैसे भौगोलिक स्थानों का परिचय होना आवश्यक है । कई गाँवों को मिलाकर परगना बनता था । सामान्यत: परगना के मुख्य स्थान को कस्बा कहते थे । कस्बे की अपेक्षा छोटे स्थानवाले गाँव को मौजा कहते थे । अब हम गाँव, कस्बा और परगना का क्रमश: संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे ।

**गाँव (मौजा) :** अधिकांश लोग गाँव में ही रहते थे । गाँव को मौजा भी कहते थे । गाँव का प्रमुख पाटिल (मुखिया) होता था । लोग गाँव की अधिकाधिक भूमि को उपज के लिए उपयोग में लायें; इसके लिए गाँव का मुखिया अर्थात पाटिल प्रयास करता । गाँव में झगड़ा-विवाद होने पर शांति बहाल करने का काम पाटिल करता था । उसके कार्य में कुलकर्णी सहायता करता । जमा राजस्व का अभिलेख अथवा लिखा-पढ़ी रखने का काम कुलकर्णी करता था । गाँव में विभिन्न काम करनेवाले श्रमिक (परजा) थे । उनको व्यवसायों से संबंधित अधिकार वंश परंपरा से प्राप्त होते थे । गाँव में श्रमिक अपनी सेवाएँ देते थे और उसके बदले में उन्हें किसान से अनाज का कुछ हिस्सा मिल जाता । उस हिस्से को परजा (बलुत) कहते थे ।

**कस्बा :** एक बड़े गाँव को कस्बा कहते थे । सामान्यत: कस्बा परगना का मुख्य स्थान होता था । जैसे - इंदापुर परगना का मुख्य स्थान इंदापुर कस्बा, वाई परगना का मुख्य स्थान वाई कस्बा । गाँव की तरह ही कस्बे में भी मुख्य व्यवसाय खेती ही होता था। वहाँ बढ़ई, लुहार आदि कुशल श्रमिक (कारीगर) भी होते थे। कस्बे से जुड़े बाजार पेठ (हाट) भी होते थे। शेटे और महाजन बाजार पेठ के माफीदार अथवा जागीरदार प्रशासक होते थे । ऐसा नहीं है कि प्रत्येक गाँव में बाजार पेठ होते ही थे लेकिन गाँव में बाजार पेठ बसाने का काम शेटे-महाजनों का होता था। इसके लिए उन्हें सरकार द्वारा जमीन और गाँववालों से कुछ अधिकार प्राप्त होते थे । बाजार पेठ का हिसाब-किताब रखने का काम महाजन देखता था ।

**क्या तुम जानते हो ?**

वीरमाता जिजाबाई के आदेश पर पुणे के समीप पाषाण में एक पेठ (हाट) बसाई गई थी। उसे 'जिजापुर' कहते थे । मालपुरा, खेलपुरा, परसपुरा, विठापुरा ये भी औरंगाबाद में बसाई गई - नई पेठें हैं । ये नई पेठें मालोजी, खेलोजी, परसोजी और विठोजी के नामों पर बसाई गई थीं । 'खेड़' से जुडा 'शिवापुर' शिवाजी महाराज के नाम पर बसाई गई पेठ थी ।

**इसे समझें**

दो गाँव स्वतंत्र हैं; यह दर्शाने के लिए 'बुद्रुक' और 'खुर्द' शब्दों का प्रयोग किया जाता है । मूल गाँव 'बुद्रुक' और नया गाँव 'खुर्द' होता है । जैसे - वड़गाँव बुद्रुक और वड़गाँव खुर्द ।

**परगना :** कई गाँवों को मिलाकर परगना बनता था। फिर भी सभी परगनों में गाँवों की संख्या समान नहीं होती थी । जैसे - पुणे परगना । यह बड़ा परगना था । इसमें २९० गाँव थे । चाकण परगने में ६४ गाँव थे । शिरवल परगना छोटा था । इसमें ४० गाँव थे । देशमुख और देशपांडे परगना के माफीदार अर्थात वतनदार अधिकारी होते थे । परगना के पाटिलों (मुखिये) का प्रमुख देशमुख होता था । गाँव के स्तर पर जो कार्य पाटिल करता था; वही कार्य परगना के स्तर पर देशमुख करता था । इसी तरह परगाना के सभी कुलकर्णियों का प्रमुख देशपांडे होता था । गाँव के स्तर पर जो कार्य कुलकर्णी करता था; वही कार्य परगना के स्तर पर देशपांडे करता था । ये माफीदार अर्थात वतनदार अधिकारी प्रजा और सरकार के बीच सेतु अथवा पुल का काम करते थे ।

परगना के गाँवों पर कभी कोई संकट आता अथवा अकाल जैसी स्थिति निर्माण हो जाती तो प्रजा की माँगों को सरकार के सम्मुख रखने का काम ये वतनदार अथवा माफीदार अधिकारी करते । कभी-कभी ये अधिकारी अपने अधिकारों का दुरुपयोग करते। कभी वे प्रजा से अधिक पैसा वसूल करते तो कभी प्रजा से इकट्ठा की गई राशि को सरकार के पास जमा करने में विलंब करते । ऐसी स्थिति में प्रजा त्रस्त हो जाती ।

**क्या तुम जानते हो ?**

वतन अरबी शब्द है तथा महाराष्ट्र में यह शब्द वंश परंपरा द्वारा और स्थायी रूप में उपभोग की जानेवाली भू-राजस्व (लगान) मुक्त जमीन के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

**अकाल का संकट :** वर्षा के जल पर खेती निर्भर करती है । यदि वर्षा न हो तो खेत में फसल नहीं आती। फलत: अनाज के दाम बढ़ जाते । लोगों को अनाज मिलना दूभर हो जाता । पशुओं को चारा न मिलता । पानी की प्रखर कमी निर्माण हो जाती। लोगों के लिए गाँव में रहना असह्य हो जाता । लोग गाँव छोड़कर चले जाते । वे दर-दर भटकने के लिए विवश हो जाते । प्रजा के लिए अकाल बहुत बड़ा संकट बन जाता ।

ऐसा ही भयानक अकाल महाराष्ट्र में पड़ा था । इसका वर्णन यों मिलता है - यह अकाल ई.स.१६३० में पड़ा । इस अकाल ने लोगों में हाहाकार मचा दिया । अनाज की भयंकर कमी उत्पन्न हुई । रोटी के टुकड़े के लिए लोग स्वयं को बेचने के लिए तैयार हुए लेकिन खरीदनेवाला कोई नहीं था । परिवार उजड़ गए । ढोर-डंगर मर गए । खेती नष्ट हुई । उद्योग-धंधे चौपट हो गए । लेन-देन रुक गया । लोग देश निकाला हो गए । जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया था । उसे पटरी पर लाना बहुत बड़ी चुनौती थी ।

**वारकरी पंथ का कार्य :** समाज पर अंधविश्वास और कर्मकांड का बड़ा प्रभाव था । लोग भाग्यवाद के अधीन हो गए थे । उनकी प्रयत्नशीलता कम हो गई थी । जनता की हालत बड़ी खस्ता थी । ऐसी स्थिति में समाज में चेतना निर्माण करने का कार्य महाराष्ट्र के वारकरी पंथ ने किया ।

महाराष्ट्र में संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर से यह संत परंपरा प्रारंभ हुई और समाज के विभिन्न वर्गों से आए हुए संतों ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया । इस संत परंपरा में समाज के सभी वर्गों के लोगों का समावेश था । जैसे - संत चोखा मेला, संत गोरोबा, संत सावता, संत नरहरि, संत सेना, संत शेख महंमद आदि । इसी तरह; इन संतों में संत चोखोबा की पत्नी संत सोयरा और बहन संत निर्मलाबाई, संत मुक्ताबाई, संत जनाबाई, संत कान्होपात्रा, संत बहिणाबाई सिऊरकर आदि महिलाएँ भी थीं । इस संत आंदोलन का केंद्र पंढरपुर था । इन संतों के देवता श्री विठ्ठल थे । पंढरपुर में चंद्रभागा नदी के तट पर ये सभी संत और वारकरी इकट्ठे होते । भक्तिसागर में सराबोर हो जाते । वहाँ भजन, कीर्तन और सहभोज (काला) के माध्यम से समता का प्रसार होता था ।

संत नामदेव

**संत नामदेव :** वारकरी संप्रदाय में ये सर्वश्रेष्ठ संत माने जाते हैं । वे कुशल संगठक और उत्तम कीर्तनकार भी थे । कीर्तन के माध्यम से उन्होंने सभी जाति-वर्गों के स्त्री-पुरुषों को एकत्रित कर उनमें समता की भावना जागृत की । **'नाचू कीर्तनाचे रंग । ज्ञानदीप लावू जगी ।।'** संसार में ज्ञान और भक्ति का दीप जलाने की उनकी यह प्रतिज्ञा थी । उनके अभंग (सबद) रचनाएँ प्रसिद्ध हैं । उनकी सीख का प्रभाव अनेक संतों और सामान्यजन पर पड़ा । संत नामदेव अपने विचारों का प्रसार करते हुए पंजाब गए। उनके लिखे पद 'गुरु ग्रंथसाहिब' ग्रंथ में समाविष्ट हैं । उन्होंने भागवत धर्म का संदेश गाँव-गाँव में प्रचारित करने का कार्य किया । उन्होंने पंढरपुर में श्री विठ्ठल के महाद्वार के सम्मुख संत चोखामेला की समाधि का निर्माण करवाया । उनका यह कार्य अविस्मरणीय है ।

**संत ज्ञानेश्वर :** संत ज्ञानेश्वर वारकरी संप्रदाय के विख्यात संत थे । उन्होंने संस्कृत ग्रंथ 'भगवद्गीता' का मराठी में टीका ग्रंथ लिखा । इस ग्रंथ का नाम 'ज्ञानेश्वरी' हैं । इसे 'भावार्थ दीपिका' भी कहते हैं । साथ ही उन्होंने 'अमृतानुभव' ग्रंथ की रचना की । उन्होंने अपने ग्रंथों और अभंगों (सबद) द्वारा भक्तिमार्ग का महत्त्व बताया । उन्होंने ऐसा आचरण धर्म बताया; जो आचरण सामान्यजन कर सकते हैं । वारकरी संप्रदाय को धर्म की प्रतिष्ठा प्राप्त करा दी । उनका जीवन अत्यंत प्रतिकूल परिस्थिति में बीता परंतु उन्होंने अपने मन का संतुलन नहीं खोया और कटुता भी नहीं रखी । ज्ञानेश्वरी में लिखित 'पसायदान' उदात्त संस्कार करता है । संत ज्ञानेश्वर के भाई संत निवृत्तिनाथ और संत सोपानदेव तथा बहन मुक्ताबाई की काव्यरचनाएँ प्रसिद्ध हैं ।

संत ज्ञानेश्वर

**संत एकनाथ :** महाराष्ट्र में चले भक्ति आंदोलन के ये महान संत थे । उनका साहित्य विपुल और विविध प्रकार का है । इस साहित्य में अभंग (सबद), गौलणी, भारुड आदि का समावेश है । उन्होंने भागवत धर्म को सरल और विस्तार में रचा और समझाया । रामकथा के माध्यम से भावार्थ रामायण में लोकजीवन को चित्रित किया है । उन्होंने संस्कृत ग्रंथ भागवत में उल्लिखित भक्ति का अर्थ मराठी में स्पष्ट किया । उनके अभंगों में अपनापन का भाव पाया जाता है । परमार्थ अथवा ईश्वर प्राप्ति के लिए घर-गृहस्थी त्यागने की आवश्यकता नहीं; इसे उन्होंने स्वयं के आचरण द्वारा सिद्ध कर दिखाया । वे सच्चे अर्थ में लोकशिक्षक थे । उनका मानना था कि अपनी मराठी भाषा किसी भी भाषा की तुलना में कम श्रेष्ठ नहीं है। **'संस्कृत वाणी देवे केली । तरी प्राकृत काय चोरापासूनि झाली?'** इन शब्दों में उन्होंने संस्कृत पंडितों को फटकारा । उन्होंने अन्य धर्मों का तिरस्कार करनेवालों की कड़े शब्दों में आलोचना की ।

संत एकनाथ

**संत तुकाराम :** संत तुकाराम पुणे के समीप देहू गाँव में रहते थे । उनकी अभंग रचनाएँ मधुर और प्रासादिक हैं । उनके अभंगों (सबदों) को श्रेष्ठ कवित्व की गरिमा प्राप्त है । संत तुकाराम द्वारा रचित 'गाथा' ग्रंथ मराठी भाषा की अमूल्य थाती है ।

संत तुकाराम

वे त्रस्त और दुखी लोगों में ईश्वर को देखने और पाने को कहते हैं । वे कहते हैं, "**जे का रंजले गांजले। त्यांसी म्हणे जो आपुले । तोचि साधु ओळखावा । देव तेथेचि जाणावा ।**" उन्होंने अपने इसी सिद्धांत के कारण लोगों को दिए हुए कर्ज के

ऋणपत्र इंद्रायणी नदी में डुबो दिए तथा अनेक परिवारों को ऋणमुक्त कर दिया । उन्होंने समाज में व्याप्त आडंबर-पाखंड और अंधविश्वास की कड़े शब्दों में आलोचना की । वे भक्ति के साथ नैतिकता को जोड़ने पर बल देते थे। **'जोडोनिया धन उत्तम व्यवहारे । उदास विचारे वेच करी ।।'** इन पंक्तियों में उनके विचारों का सार बताया जा सकता है । समाज के कुछ तथाकथित कर्मकांडी और कट्टर लोगों ने उनके द्‌वारा किए जाने वाले जनजागृति के कार्य को विरोध जताया । वास्तव में उन्हें अभंग रचने का कोई अधिकार ही नहीं है; इस प्रकार ललकारते हुए कट्टर लोगों ने उनकी काव्य सामग्री को इंद्रायणी नदी में डुबोकर नष्ट करने का प्रयास किया । संत तुकाराम ने लोगों के विरोध का बड़े धैर्य के साथ सामना किया ।

संत तुकाराम के शिष्य एवं सहयोगी सभी जाति-वर्गों के थे । नावजी माली, गवनरसेठ वाणी, संताजी जगनाडे, शिवबा कासार, बहिणाबाई सिऊरकर, महादजीपंत कुलकर्णी आदि कुछ नाम हैं । गंगारामपंत मवाल और संताजी जगनाड़े ने संत तुकाराम के अभंग लिखकर रखे हैं और यह उनका महत्त्वपूर्ण योगदान कहा जा सकता है ।

**संतों के कार्यों का परिणामफल :** सभी संतों ने लोगों को समता का संदेश सुनाया । मानवता और मानवता धर्म का पाठ पढ़ाया । एक-दूसरे के प्रति प्रेम भाव रखो, एक बनो, एक रहो; यह उनकी सीख थी । उनके कार्यों के फलस्वरूप लोगों में जागृति उत्पन्न हुई । मानवनिर्मित संकट हो, अकाल हो अथवा अलग-अलग प्रकार की प्राकृतिक आपदाएँ हों; इनकी चिंता न करते हुए मनुष्य को किस प्रकार जीना चाहिए; इन बातों का संतों के द्‌वारा किया गया उपदेश लोगों के लिए बहुत बड़ा अवलंब बना। संतों के इन कार्यों से महाराष्ट्र की जनता में आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ ।

समाज में धर्म का अध:पतन हुआ था; इस स्थिति में संतों ने आगे बढ़कर समाज का रक्षण किया। धर्म के वास्तविक अर्थ और मर्म से परिचित कराया । लोगों के बीच रहकर; उनके सुख-दुख को समझकर भक्तिमार्ग की प्रेरणा दी । ऐसे समय समाज के कुछ कट्टर और दकियानूसी लोगों ने उनको विरोध किया । संत यह मानते थे कि उनके इस विरोध को सहना संतों के कर्तव्यों का ही एक हिस्सा है । **'तुका म्हणे तोचि संत। सोशी जगाचे आघात ।।'** इन शब्दों में संत तुकाराम ने सच्चे संत के लक्षण बताए हैं ।

धर्मशास्त्री और पंडितों ने धर्म को कठिन और जटिल भाषा में व्याख्यायित किया । संतों ने धर्म को सामान्य जनता की भाषा में उतारा । प्रतिदिन की बोलचाल की भाषा में ईश्वर की आराधना की । उनका मानना था - ईश्वर के सम्मुख सभी समान हैं। हमें अपने रंग-रूप और जाति के अहंकार को दूर कर एक-दूसरे को 'ईश्वर की संतान' के रूप में देखना चाहिए; यह सीख उन्होंने समाज को दी । इन सभी संतों की यह विशेषता रही कि भक्ति करते हुए उन्होंने अपने नित्यकर्मों का त्याग नहीं किया । उन्होंने अपने-अपने कर्मों में ईश्वर के दर्शन किए । संत सावता महाराज ने कहा - **'कांदा मुळा भाजी । अवघी विठाई माझी ।।'** यद्‌यपि उनका यह कथन खेती के काम के संदर्भ में है; फिर भी वह संतों के दैनिक जीवन के अन्य कार्यों के लिए भी सटीक जान पड़ता है । संत अपने-अपने कार्य-व्यवसाय करते हुए भक्ति, उपदेश और भक्तिपदों का निर्माण करते रहे । उन्होंने समाज का नैतिक बोध विकसित किया ।

**चलो, चर्चा करें**

पंढरपुर की वारी के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करो तथा निम्न बिंदुओं पर विचारविमर्श करो:

- वारकरी किस महीने में वारी को जाते हैं ।
- वारी के नियोजन का स्वरूप कैसा होता है?

**रामदास स्वामी :** रामदास स्वामी मराठवाडा के जांब गाँव में रहते थे । उन्होंने बल की उपासना का

महत्त्व बताया । **'मराठा तितुका मेळवावा । महाराष्ट्र धर्म वाढवावा ।'** उनके द्‌वारा दिया गया यह संदेश विख्यात है । उन्होंने दासबोध, करुणाष्टके, मनाचे श्लोक जैसी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से जनता को व्यावहारिक शिक्षा के पाठ पढ़ाए । जन आंदोलन और जन संगठन का महत्त्व बताया । समर्थ संप्रदाय की स्थापना की । चाफल नामक स्थान इस संप्रदाय का केंद्र था । उन्होंने राम और हनुमान की उपासना का प्रसार किया । अपने विचारों को दूर-दूर तक प्रचारित करने हेतु उन्होंने बहुत भ्रमण किया ।

रामदास स्वामी

**परतंत्रता में स्वतंत्रता की प्रेरणा :** शिवाजी महाराज से पूर्व समय में महाराष्ट्र में राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि स्थितियाँ सामान्य रूप से उपरोक्तानुसार थीं । इस कालखंड में महाराष्ट्र आदिलशाही आदि सत्ताओं के नियंत्रण में था । अत: महाराष्ट्र स्वतंत्र नहीं था । ऐसा होने पर भी कुछ लोग और कुछ विचारधाराएँ स्वतंत्रता के स्वप्न देख रहे थे। उनमें स्वराज्य के संकल्पना द्रष्टा माने जाने वाले शहाजी महाराज का स्थान अग्रणी था ।

## स्वाध्याय

**१. निम्न तालिका पूर्ण करो :**

| | गाँव/मौजा | कस्बा | परगना |
|---|---|---|---|
| किसे कहते हैं | ------ | ----- | ------ |
| अधिकारी | ------ | ----- | ------ |
| उदाहरण | ------ | ----- | ------ |

**२. किसे कहते हैं ?**

(१) बुद्रुक -

(२) परजा-पवन ....

(३) वतन - ....

**३. ढूँढ़कर लिखो :**

(१) कोकण के तटीय क्षेत्र में अफ्रीका से आए हुए लोग -

(२) अमृतानुभव ग्रंथ के रचनाकार -

(३) संत तुकाराम का गाँव -

(४) भारुड के रचनाकार -

(५) बल की उपासना का महत्त्व बतानेवाले -

(६) नारी संतों के नाम -

**४. अपने शब्दों में जानकारी और कार्य लिखो :**

(१) संत नामदेव (२) संत ज्ञानेश्वर

(३) संत एकनाथ (४) संत तुकाराम

**५. जनता के लिए अकाल संकट क्यों अनुभव होता था ?**

**उपक्रम**

(१) वारकरियों की दिंडी की आप किस प्रकार सहायता करेंगे; उसका नियोजन लिखो ।

(२) विविध संतों की वेशभूषा धारण करो और उनके भक्तिकाव्यों को प्रस्तुत करो ।

(३) पाठ में दी गई काव्य पंक्तियों को मराठी शिक्षक की सहायता से समझो ।

# ५. स्वराज्य की स्थापना

सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में महाराष्ट्र में युगप्रवर्तक व्यक्तित्व छत्रपति शिवाजी महाराज का उदय हुआ । उन्होंने यहाँ की अन्यायी राज्यसत्ताओं को चुनौती देते हुए स्वराज्य की स्थापना की । उनका जन्म शके १५५१, फाल्गुन वद्य तृतीया को अर्थात १९ फरवरी, १६३० को पुणे जिले में जुन्नर के समीप शिवनेरी किले में हुआ । इस पाठ में हम उनके द्वारा की गई स्वराज्य स्थापना की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

शहाजीराजे

**शहाजीराजे :** शहाजीराजे शिवाजी महाराज के पिता थे । वे दक्षिण के प्रभावशाली सरदार थे । मुगलों ने निजामशाही को जीतने के लिए अभियान चलाया । इस अभियान में बीजापुर के आदिलशाह ने मुगलों की सहायता की । मुगलों का दक्षिण में प्रवेश हो; यह शहाजीराजे को मान्य नहीं था । अत: उन्होंने मुगलों का प्रखर विरोध कर निजामशाही को बचाने का प्रयास किया परंतु मुगल और आदिलशाही की शक्ति एवं सामर्थ्य के आगे उनकी कुछ न चली । ई.स.१६३६ में निजामशाही की पराजय होकर वह समाप्त हुई ।

निजामशाही का अस्तित्व समाप्त होने के पश्चात शहाजीराजे बीजापुर की आदिलशाही के सरदार बने। शहाजीराजे के आधिपत्य में भीमा और नीरा नदियों के बीच के पुणे, सुपे, इंदापुर और चाकण परगने की जागीर थी । आदिलशाह ने जागीर का यह मूल प्रदेश उनके पास वैसा ही रखा । आदिलशाह ने उन्हें कर्नाटक में बंगलुरु और उसके आसपास का प्रदेश जागीर के रूप में दिया ।

शहाजीराजे वीर, पराक्रमी, धैर्यवान, बुद्धिमान और श्रेष्ठ राजनैतिक थे । वे उत्तम धनुर्धारी थे । साथ ही वे तलवार चलाना, भाला फेंकना और गतका-फरी घुमाना आदि में कुशल थे । उनका प्रजा पर अपार स्नेह था । उन्होंने महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु के अनेक प्रदेश जीत लिए थे । दक्षिण भारत में उनकी बड़ी धाक थी । बाल शिवाजी और जिजाबाई बंगलुरु में थे । शहाजीराजे ने बाल शिवाजी को राजा बनने के लिए आवश्यक और योग्य शिक्षा दिलाने का प्रबंध किया । विदेशी लोगों की सत्ता उलट देने तथा स्वराज्य स्थापित करने की उनकी प्रखर इच्छा थी । इसीलिए उन्हें स्वराज्य का संकल्पक कहा जाता है परंतु प्रत्यक्ष में स्वयं के जीवित रहते स्वराज्य की स्थापना करें; ऐसी अनुकूल स्थिति उन्हें प्राप्त नहीं हुई । अपनी इस इच्छा को पूर्ण करने के लिए उन्होंने बाल शिवाजी और जिजाबाई को विश्वसनीय और पराक्रमी सहयोगियों के साथ बंगलुरु से पुणे भेज दिया ।

**क्या तुम जानते हो ?**

जागीर - किसी प्रदेश से आय अथवा राजस्व वसूल करने तथा उसका उपभोग करने के अधिकार को जागीर कहते हैं । शासनकर्ताओं की सेवा में जिन लोगों को सरदार पद प्राप्त होता था; उन्हें नकद राशि के रूप में वेतन न देते हुए वेतन की राशि जितनी आय राजस्व द्वारा उन्हें मिलेगी; इतना प्रदेश दिया जाता था । उसे 'जागीर' कहते थे ।

**वीरमाता जिजाबाई :** जिजाबाई बुलढाणा जिले के सिंदखेडराजा के पराक्रमी सरदार लखुजीराजे जाधव की कन्या थीं । उन्हें बचपन में ही विभिन्न विद्याओं के साथ-साथ सैनिकी शिक्षा भी प्राप्त हुई थी । शहाजी महाराज का स्वराज्य स्थापना का स्वप्न साकार हो; उसके लिए वे उन्हें निरंतर प्रोत्साहित करती थीं । वे पराक्रमी और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थीं ।

वीरमाता जिजाबाई

स्वराज्य स्थापना के कार्य में उन्होंने शिवाजी महाराज को निरंतर मार्गदर्शन किया । समय आने पर वे प्रजा की समस्याओं को हल करने के लिए न्याय करने का कार्य भी करती थीं । वे शिवाजी महाराज को उत्तम शिक्षा देने के प्रति जागरूक भी थीं । उन्होंने शिवाजी महाराज को चरित्र, सत्यप्रियता, वाक्पटुता, सजगता, धैर्यशीलता, निर्भयता, शस्त्रप्रयोग, जीतने की आकांक्षा, स्वराज्य का स्वप्न आदि बातों के संस्कार दिए ।

**शिवाजी महाराज के सहयोगी :** शिवाजी महाराज ने स्वराज्य स्थापना का प्रारंभ मावल क्षेत्र में किया । वर्तमान पुणे जिले की पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम दिशा का क्षेत्र मावल कहलाता है । मावल का क्षेत्र पर्वतीय, खाई-घाटी और दुर्गम क्षेत्र है । शिवाजी महाराज ने मावल की इस भौगोलिक परिस्थिति का उपयोग स्वराज्य स्थापना में बड़ी कुशलता से किया । उन्होंने लोगों के मन में विश्वास और अपनापन की भावना निर्माण की । स्वराज्य स्थापना के इस कार्य में उन्हें विश्वसनीय साथी-सहयोगी मिले । उनमें येसाजी कंक, बाजी पासलकर, बापूजी मुद्गल, नरहेकर देशपांडे बंधु, कावजी कोंढालकर, जिवा महाला, तानाजी मालुसरे, कान्होजी जेधे, बाजीप्रभु देशपांडे, दादाजी नरसप्रभु देशपांडे कुछ नाम हैं । इन साथी-सहयोगियों के बल पर उन्होंने स्वराज्य स्थापना का कार्य हाथ में लिया ।

**ध्यान में रखो**

बारह मावल : (१) पवना मावल (२) हिरडस मावल (३) गुंजण मावल (४) पौड़ घाटी (५) मुठे घाटी (६) मुसे घाटी (७) कानद घाटी (८) वेलवंड घाटी (९) रोहिड़ घाटी (१०) आंदर मावल (११) नाणे मावल (१२) कोरबारसे मावल ।

शिवाजी महाराज की पुणे जागीर के सह्याद्रि पर्वत की गोद में स्थित प्रदेश मावल घाटी कहलाता है । इसे 'बारह मावल' भी कहते हैं ।

**करके देखो**

शिवाजी महाराज के सहयोगी जिवा महाला, तानाजी मालुसरे, बाजीप्रभु देशपांडे के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करो ।

राजमुद्रा

**राजमुद्रा :** स्वराज्य की स्थापना के पीछे शिवाजी महाराज का उद्देश्य उनकी इस राजमुद्रा द्वारा स्पष्ट होता है । इस राजमुद्रा पर निम्न संस्कृत पंक्तियाँ उकेरी गई हैं ।

*प्रतिपच्चंद्रलेखेव वर्धिष्णुर्विश्ववंदिता ।।*

*शाहसूनोः शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते ।।*

**अर्थ :** ''शहाजी पुत्र शिवाजी की (शुक्ल पक्ष की) प्रतिपदा के चंद्रमा की कला के समान बढ़ती जानेवाली तथा जिसको संपूर्ण विश्व ने वंदना की है; ऐसी यह मुद्रा (प्रजा के) कल्याण के लिए अधिराज्य चलाती है ।''

मुद्रा पर अंकित इस सुवचन का अर्थ अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है । शिवाजी महाराज के इस सुवचन द्वारा पिता के प्रति कृतज्ञता, स्वराज्य अविरत विस्तार पाएगा; यह विश्वास, मुद्रा अर्थात स्वराज्य के प्रति सभी को प्राप्त होता आदर भाव,

प्रजा के कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता और अपनी भूमि पर स्वतंत्रतापूर्वक अधिराज्य चलाने का विश्वास व्यक्त हुआ है । इस लघु सुवचन में स्वराज्य की संकल्पना का सर्वांगीण सार सिमटा हुआ है ।

**समझें**

- अपने देश की राजमुद्रा का निरीक्षण करो ।
- उसमें कौन-कौन-सी बातें दिखाई देती हैं ?
- राजमुद्रा का उपयोग कहाँ-कहाँ किया गया दिखाई देता है ?

**स्वराज्य स्थापना की गतिविधियाँ :** शिवाजी महाराज की जागीर में जो किले थे; वे वास्तव में उनके अधिकार में नहीं थे । वे किले/गढ़ आदिलशाही के नियंत्रण में थे । उस समय किलों/गढ़ों का असाधारण महत्त्व था । किला अथवा गढ़ अपने अधिपतित्व में हो तो आस-पास के प्रदेशों पर नियंत्रण रखा जा सकता था । स्थिति यह थी - 'जिसका किला, उसी का राज्य' । शिवाजी महाराज ने अपनी जागीर के किलों को अपने अधिकार में कर लेने का निश्चय कर लिया । किलों को अपने अधिकार में कर लेने का प्रयास करने का अर्थ आदिलशाह की सत्ता को चुनौती देना था । उन्होंने तोरणा, मुरुंबदेव, कोंढाणा, पुरंदर किलों को अपने अधिकार में कर लिया और स्वराज्य की नींव रखी। मुरुंबदेव किले की मरम्मत कर उसका नामकरण 'राजगढ़' किया गया । राजगढ़ स्वराज्य की प्रथम राजधानी बना ।

किला राजगढ़ - पाली दरवाजा

आदिलशाही में जावली के मोरे, मुधोल के घोरपड़े और सावंतवाड़ी के सावंत आदि सरदार थे। इन सरदारों को स्वराज्य स्थापना के प्रति विरोध था। स्वराज्य स्थापना के लिए इन सरदारों को सही रास्ते पर लाना आवश्यक था ।

**जावली पर अधिकार :** सातारा जिले में जावली नामक स्थान का सरदार चंद्रराव मोरे था । वह आदिलशाह का पराक्रमी सरदार था । उसने स्वराज्य स्थापना के कार्य को विरोध किया । अत: ई.स. १६५६ में शिवाजी महाराज ने जावली पर आक्रमण कर उस प्रदेश को जीत लिया । उसे अपना केंद्र बनाया । इसके बाद रायगढ़ भी जीत लिया । जावली की विपुल संपत्ति उनके हाथ लगी । जावली को जीतने के बाद शिवाजी महाराज ने कोकण में अपनी गतिविधियाँ तेज कर दीं । उन्होंने जावली की घाटी में प्रतापगढ़ किले का निर्माण करवाया । जावली पर विजय प्राप्त करने से उनकी सामर्थ्य में सभी प्रकार से वृद्धि हुई ।

इसके बाद शिवाजी महाराज ने कल्याण और भिवंडी भी जीत लिए । इससे उनका पश्चिमी तट पर बसीं सिद्दी, पुर्तगाली और अंग्रेजी सत्ताओं से आमना-सामना हुआ । यदि इन सत्ताओं से संघर्ष करना है तो हमें शक्तिशाली नौसेना का निर्माण करना होगा; यह उनके ध्यान में आया । अत: उन्होंने नौसेना निर्माण की ओर ध्यान दिया ।

**अफजल खान का दमन :** शिवाजी महाराज ने अपनी जागीर और आसपास के आदिलशाही प्रदेश के किलों को अपने अधिकार में लेना प्रारंभ किया । वे जावली के मोरे का विरोध कुचल चुके थे । कोकण क्षेत्र में स्वराज्य स्थापना के कार्य को गति प्राप्त हुई थी । ये सभी बातें जैसे आदिलशाही को चुनौती थीं। उस समय आदिलशाही का प्रशासन बड़ी साहिबा चला रही थी । उसे लगने लगा कि शिवाजी महाराज का बंदोबस्त करना चाहिए । इसलिए उसने आदिलशाही के बलवान और अनुभवी सरदार अफजल खान को शिवाजी महाराज पर आक्रमण करने के लिए कहा ।

अफजल खान बीजापुर से चलकर वाई आ

पहुँचा। अफजल खान वाई प्रांत से भली-भाँति परिचित था । वाई के निकट प्रतापगढ़ की तलहटी में १० नवंबर १६५९ को शिवाजी महाराज और अफजल खान की भेंट हुई । इस भेंट में अफजल खान ने शिवाजी महाराज को छल-कपट से हानि पहुँचाने का प्रयास किया। इसलिए उन्होंने अफजल खान को मौत के घाट उतार दिया और आदिलशाही सेना का दमन किया ।

अफजल खान का वध करने के बाद शिवाजी महाराज ने युद्ध में घायल हुए सैनिकों को मानधन दिया। युद्ध में वीरता का प्रदर्शन करने वाले सैनिकों को पुरस्कार दिए । अफजल खान की सेना के जिन सैनिकों और अधिकारियों को शिवाजी महाराज ने बंदी बनाया था; उनके साथ उन्होंने भलमनसाहत का व्यवहार किया ।

**सिद्दी जौहर का आक्रमण :** अफजल खान का दमन करने के पश्चात शिवाजी महाराज ने आदिलशाही के वसंतगढ़, पन्हाला और खेलणा किले जीत लिए। खेलणा किले को 'विशालगढ़' नाम दे दिया ।

शिवाजी महाराज का बंदोबस्त करने के लिए आदिलशाह ने ई.स.१६६० में करनूल प्रदेश का सरदार सिद्दी जौहर से शिवाजी महाराज पर आक्रमण करने को कहा । उसे 'सलाबत खान' की उपाधि दी । सिद्दी जौहर की सहायता के लिए रुस्तम-ए-जमान, बाजी घोरपड़े और अफजल खान का बेटा फजल खान भी थे । इस स्थिति में शिवाजी महाराज पन्हाला गढ़ में चले गए । सिद्दी की सेना ने लगभग पाँच महीने पन्हाला गढ़ को घेर रखा था । इस घेरे से निकलना शिवाजी महाराज के लिए कठिन हो गया था । नेतोजी पालकर ने बाहर से सिद्दी की सेना पर आक्रमण कर इस घेरे को हटाने का प्रयास किया परंतु उसकी सेना बहुत कम थी । इसलिए यह प्रयास सफल नहीं हुआ। सिद्दी घेरा हटाएगा; ऐसे आसार दिखाई नहीं दे रहे थे । अत: शिवाजी महाराज ने सिद्दी से बातचीत प्रारंभ की । इससे पन्हाला गढ़ का घेरा ढीला पड़ गया। शिवाजी महाराज को इस स्थिति का लाभ प्राप्त हुआ ।

इस स्थिति में गढ़ का शिवा काशिद नामक पराक्रमी युवक आगे बढ़ आया । यह युवक शिवाजी महाराज जैसा दिखाई देता था । उसने शिवाजी महाराज जैसी वेशभूषा धारण की और पालकी में बैठ गया । यह पालकी राजदिंडी दरवाजे से बाहर निकल गई । सिद्दी की सेना ने इस पालकी को पकड़ लिया । यह घड़ी बड़े संकट की थी । शिवा काशिद ने स्वराज्य के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया । इसी बीच शिवाजी महाराज दूसरे दुर्गम रास्ते से गढ़ से बाहर निकल गए । उनके साथ बाजीप्रभु देशपांडे और बांदल-देशमुख सहित कुछ चुनिंदा सैनिक थे ।

शिवाजी महाराज पन्हाला गढ़ के घेरे से निकलकर विशालगढ़ की ओर बढ़े । सिद्दी को यह समाचार प्राप्त हुआ । उसकी सेना ने उनका पीछा किया । सिद्दी की सेना को विशालगढ़ की तलहटी में रोकने का दायित्व शिवाजी महाराज ने बाजीप्रभु देशपांडे को सौंपा ।

बाजीप्रभु देशपांडे ने गजापुर के समीप घोड़दर्रा (घोडखिंड) में सिद्दी की सेना को रोका । बाजीप्रभु ने वीरता की पराकाष्ठा की परंतु वह वीरगति को प्राप्त हुआ । उसके सैनिकों ने सिद्दी की सेना को रोककर रखा था । परिणामत: शिवाजी महाराज को विशालगढ़ की ओर बढ़ना संभव हुआ । विशालगढ़ जाते समय शिवाजी महाराज ने पालवन के दलवी और शृंगारपुर के सुर्वे के विरोध का दमन किया । ये आदिलशाही के सरदार थे । इसके बाद शिवाजी महाराज सकुशल विशालगढ़ पहुँच गए ।

जिस समय शिवाजी महाराज पन्हाला गढ़ के घेरे में घिरे हुए थे; उस समय दिल्ली की सत्ता पर आसीन हुए औरंगजेब बादशाह ने मुगल सरदार शाइस्ता खान को दक्षिण में भेजा । उसने पुणे प्रांत पर आक्रमण किया था । उस समय शिवाजी महाराज का आदिलशाही के साथ संघर्ष चल रहा था । इस स्थिति में; दो शत्रुओं के साथ एक ही

समय में युद्ध करना उचित नहीं होगा; यह शिवाजी महाराज के ध्यान में आया । अत: विशालगढ़ पर सकुशल पहुँचने के बाद उन्होंने आदिलशाह के साथ संधि कर ली । इस संधि के अनुसार उन्हें पन्हाला किला लौटाना पड़ा। यहाँ शिवाजी महाराज की स्वराज्य स्थापना का एक चरण पूर्ण हुआ ।

## स्वाध्याय

**१. समूह में संगति न रखनेवाला शब्द ढूँढ़ो :**

(१) पुणे, सुपे, चाकण, बंगलुरु

(२) फलटण के जाधव, जावली के मोरे, मुधोल के घोरपडे, सावंतवाडी के सावंत

(३) तोरणा, मुरुंबदेव, सिंहगढ़, सिंधुदुर्ग

**२. चलो लेखन करें :**

(१) वीरमाता जिजाबाई द्वारा शिवाजी महाराज को दिए गए संस्कार लिखो ।

(२) शिवाजी महाराज ने स्वराज्य स्थापना का प्रारंभ मावल क्षेत्र से किया ।

**३.** शिवाजी महाराज के साथी-सहयोगियों की सूची बनाओ ।

**४. ढूँढ़ो और लिखो :**

(१) शहाजीराजे को स्वराज्य का संकल्पक क्यों कहते हैं ?

(२) शिवाजी महाराज ने नौसेना निर्माण की ओर ध्यान क्यों दिया ?

(३) शिवाजी महाराज ने आदिलशाह के साथ संधि क्यों की ?

(४) शिवाजी महाराज पन्हाला गढ़ से किस प्रकार निकल गए ?

**उपक्रम**

(१) तुम्हारे देखे हुए किसी किले का वर्णन करो और ऐतिहासिक वास्तु का संरक्षण करने के विषय में तुम क्या उपाय सुझाओगे; यह बताओ ।

(२) खेती का 'सात/बारा' (७/१२) कागज प्राप्त कर पाठ में आए हुए शब्दों के अर्थ समझ लो ।

किला पन्हाला – तीन दरवाजा

# ६. मुगलों से संघर्ष

अब तक शिवाजी महाराज ने आदिलशाही के साथ सफलतापूर्वक संघर्ष किया था परंतु स्वराज्य का विस्तार करते समय मुगलों से संघर्ष करना भी अटल था। स्वराज्य का विस्तार प्रारंभ होते ही स्वराज्य पर मुगलों का संकट मंड़राने लगा । शिवाजी महाराज ने इस संकट पर भी विजय पाई । मुगलों से अपने किले और प्रदेश पुन: अपने अधिकार में कर लिए । स्वयं का राज्याभिषेक करवाया । दक्षिण में अभियान चलाया। इस पाठ में हम इन सभी घटनाओं की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

**शाइस्ता खान का आक्रमण :** फरवरी १६६० में शाइस्ता खान अहमदनगर से पुणे प्रांत में आया। उसने सैनिकों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ आसपास के प्रदेशों में भेजकर स्वराज्य के प्रदेश को बुरी तरह से ध्वस्त किया । उसने चाकण के किले को घेर लिया। चाकण किले का किलेदार फिरंगोजी नरसाला ने शाइस्ता खान की सेना का डटकर सामना किया। अंतत: शाइस्ता खान ने चाकण के किले को जीत लिया ।

अब शाइस्ता खान ने पुणे के लाल महल में पड़ाव डाला। यहाँ तो शिवाजी महाराज का बचपन बीता था। यहाँ से उसने आसपास के प्रदेश की लूट-पाट जारी ही रखी । दो वर्ष हुए फिर भी वह पुणे से अपना पड़ाव हटाने को तैयार नहीं था । इसका दुष्प्रभाव प्रजा के मनोबल पर होना स्वाभाविक था। इस स्थिति में शिवाजी महाराज ने एक साहसिक योजना बनाई ।

शिवाजी महाराज ने अपनी निगरानी में लाल महल पर चुपचाप धावा बोलने की साहसिक योजना बनाई । इस योजना के अनुसार ५ अप्रैल १६६३ को शिवाजी महाराज ने रात के समय अपने कुछ सैनिकों के साथ लाल महल पर धावा बोल दिया। इस धावे में शाइस्ता खान की उंगलियाँ कट गईं । इससे वह अपमानित हुआ । वह पुणे छोड़कर औरंगाबाद चला गया और वहाँ अपना पड़ाव डाला। इस घटना के कारण शाइस्ता खान को औरंगजेब का रोष सहना पड़ा । औरंगजेब ने उसे बंगाल के सूबे में भेजा । शाइस्ता खान पर हुए इस सफल आक्रमण से लोग भी प्रभावित हुए । शिवाजी महाराज के प्रति लोगों का विश्वास दृढ़ हो गया ।

**बताओ तो**

सूरत शहर जाना है तो तुम कैसे जाओगे; यह मानचित्र की सहायता से दर्शाओ ।

- शिवाजी महाराज सूरत कैसे पहुँचे होंगे; इसकी कल्पना करो ।

**सूरत पर आक्रमण :** तीन वर्ष की कालावधि में शाइस्ता खान ने स्वराज्य का बड़ा प्रदेश ध्वस्त किया था । इस हानि को पूर्ण करना आवश्यक था। अत: शिवाजी महाराज ने मुगलों को सबक सिखाने की योजना बनाई । मुगलों के अधिकार में सूरत शहर था। यह बहुत बड़ा व्यापारिक केंद्र और बंदरगाह था । वहाँ अंग्रेज, डच और फ्रांसीसियों के गोदाम थे । इस शहर से बादशाह औरंगजेब को सबसे अधिक राजस्व प्राप्त होता था। साथ ही; सूरत आर्थिक रूप से संपन्न शहर था । अत: शिवाजी महाराज ने सूरत पर आक्रमण किया । सूरत का सूबेदार इनायत खान शिवाजी महाराज का प्रतिकार नहीं कर पाया । सामान्य प्रजा को कष्ट न पहुँचाते हुए उन्होंने सूरत से विपुल संपत्ति पाई । उनका यह अभियान सफल रहा । इस अभियान से औरंगजेब की प्रतिष्ठा को आघात लगा ।

**जयसिंह का आक्रमण :** शिवाजी महाराज की बढ़ती गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए औरंगजेब ने अपने पराक्रमी और अनुभवी सरदार मिर्जा राजे जयसिंह को भेजा । जयसिंह पुणे पहुँचा। उसने शिवाजी महाराज के विरोध में सभी शक्तियों को संगठित करने के अपने प्रयास प्रारंभ किए । जयसिंह ने गोआ और

वसई के पुर्तगालियों, वेंगुर्ला के डचों, सूरत के अंग्रेजों, जंजीरा के सिद्दियों को सुझाया कि वे शिवाजी महाराज के विरुद्ध नौसेना अभियान चलाएँ ।

जयसिंह ने शिवाजी महाराज के अधिकारवाले किलों को जीतने की योजना बनाई । स्वराज्य के विविध भागों में उसने मुगल सैनिकों की टुकड़ियों को भेजा । उन सैनिकों ने स्वराज्य के प्रदेश को तहस-नहस किया । शिवाजी महाराज ने मुगलों का प्रतिकार किया। जयसिंह और दिलेर खान ने पुरंदर किले को घेर लिया। पुरंदर को घेरे जाने पर मुरारबाजी देशपांडे ने वीरता की पराकाष्ठा की परंतु वह वीरगति को प्राप्त हुआ । परिस्थिति की गंभीरता को देखते हुए शिवाजी महाराज ने जयसिंह से बातचीत करने का निर्णय किया । वे जयसिंह से मिले। जयसिंह और शिवाजी महाराज के बीच जून १६६५ में संधि हुई । इसे 'पुरंदर की संधि' कहते हैं । इस संधि के अनुसार शिवाजी महाराज ने तेईस किले और उनके आस-पास का वार्षिक चार लाख होन आयवाला प्रदेश दिया । शिवाजी महाराज ने आदिलशाही के विरुद्ध मुगलों की सहायता करने का आश्वासन भी दिया। इस संधि को औरंगजेब ने स्वीकृति दी ।

**बताओ तो**

शिवाजी महाराज आगरा में औरंगजेब की नजरकैद से किस प्रकार निकल आए, इसकी जानकारी प्राप्त करो ।

**आगरा जाना और चकमा देकर निकल आना :** पुरंदर की संधि के बाद जयसिंह ने आदिलशाही के विरुद्ध अभियान चलाया । शिवाजी महाराज ने जयसिंह की सहायता की परंतु जयसिंह का यह अभियान सफल नहीं हुआ । उस समय जयसिंह और औरंगजेब बादशाह ने यह विचार किया कि कुछ समय के लिए शिवाजी महाराज को दक्षिण की राजनीति से दूर रखना चाहिए । इस निर्णय के अनुसार जयसिंह ने शिवाजी महाराज के सामने प्रस्ताव रखा कि वे औरंगजेब से मिलने आगरा जाएँ। जयसिंह ने उन्हें उनकी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त कराया । शिवाजी महाराज ने आगरा के लिए प्रस्थान किया । उनके साथ राजपुत्र संभाजी तथा विश्वसनीय और प्राण निछावर करने वाले चुनिंदा सहयोगी भी थे ।

शिवाजी महाराज आगरा पहुँचे परंतु औरंगजेब ने दरबार में उन्हें उचित सम्मान प्रदान नहीं किया । इसपर शिवाजी महाराज ने अपना क्रोध व्यक्त किया। इसके पश्चात औरंगजेब ने उन्हें नजरबंद किया । बादशाह की इस हरकत से शिवाजी महाराज विचलित नहीं हुए अपितु उन्होंने नजरबंदी से छुटकारा पाने की योजना बनाई । वे बड़ी चतुराई से आगरा से निकल गए और कुछ दिनों के बाद महाराष्ट्र में सकुशल पहुँच गए । आगरा से आते समय उन्होंने संभाजी महाराज को मथुरा में छोड़ा था । कालांतर में उन्हें भी सकुशल राजगढ़ पर लाया गया । जब शिवाजी महाराज स्वराज्य से दूर थे तब वीरमाता जिजाबाई और शिवाजी महाराज के सहयोगियों ने प्रशासन चलाया ।

**मुगलों के विरुद्ध आक्रामक भूमिका :** शिवाजी महाराज मुगलों के साथ तुरंत संघर्ष नहीं चाहते थे परंतु पुरंदर की संधि के अनुसार मुगलों को दिए हुए किले और प्रदेश पुन: प्राप्त करना उनका उद्देश्य था। इसके लिए उन्होंने एक व्यापक और साहसिक योजना बनाई। इस नीति के अनुसार एक ओर दिए हुए विभिन्न किलों पर पूरा दल-बल भेजकर किले अपने अधिकार में कर लेने हैं और दूसरी ओर मुगलों के प्रभाववाले दक्खिनी प्रदेशों पर आक्रमण करके उन्हें परेशान कर रखना है । अब उन्होंने मुगलों के अहमदनगर और जुन्नर प्रदेशों पर आक्रमण किए। इसके बाद सिंहगढ़, पुरंदर, लोहगढ़, माहुली, कर्नाला और रोहिड़ा किले जीत लिए। इसके पश्चात शिवाजी महाराज ने दूसरी बार सूरत पर धावा बोला । सूरत से लौटते समय उनका नाशिक जिले में वणी-दिंडोरी स्थान पर मुगलों के साथ जबर्दस्त संघर्ष हुआ। इस संघर्ष में शिवाजी

महाराज ने मुगल सरदार दाऊद खान को पराजित किया । तदुपरांत मोरोपंत पिंगळे ने नाशिक के निकट त्र्यंबकगढ़ को जीता।

इस प्रकार मुगलों के विरुद्ध शिवाजी महाराज ने जो आक्रामक नीति अपनाई थी, वह सफल हुई । आक्रमण के इन अभियानों में तानाजी मालुसरे, मोरोपंत पिंगळे, प्रतापराव गुजर आदि सरदारों ने उल्लेखनीय पराक्रम दिखाया। बखरकार (इतिहासकार) कृष्णाजी अनंत सभासद ने इन अभियानों का वर्णन करते हुए लिखा है, 'चार महीनों में सत्ताईस गढ़ अपने अधिकार में कर लिए; बड़ी ख्याति पाई ।'

छत्रपति शिवाजी महाराज

**राज्याभिषेक :** लगातार तीस वर्षों के अथक परिश्रम के फलस्वरूप मराठों का स्वराज्य साकार हो गया था परंतु स्वराज्य के स्वतंत्र और प्रभुत्व संपन्न अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए इस स्वराज्य को अधिकृतता और सभी की मान्यता प्राप्त होना आवश्यक है; यह शिवाजी महाराज के ध्यान में आया । इसके लिए विधिवत राज्याभिषेक करवाना आवश्यक था । ६ जून, १६७४ को शिवाजी महाराज ने विद्वान पंडित गागा भट्ट द्वारा रायगढ़ पर अपना राज्याभिषेक करवाया ।

इस राज्याभिषेक द्वारा अब शिवाजी महाराज स्वराज्य के छत्रपति बने । संप्रभुता के प्रतीक रूप में उन्होंने 'राज्याभिषेक शक' इस नई कालगणना को प्रारंभ किया । अब वे 'शककर्ता' बने । राज्याभिषेक के अवसर पर उन्होंने स्वर्ण का सिक्का 'होन' और तांबे का सिक्का 'शिवराई' ढाले । इन सिक्कों पर 'श्री राजा शिवछत्रपति' ये अक्षर उकेरे हुए थे । इसके पश्चात कालांतर में राजपत्रों पर 'क्षत्रिय कुलावंतस श्री राजा शिवछत्रपति' का उल्लेख किया जाने लगा । राज्याभिषेक के पश्चात उन्होंने फारसी शब्दों का पर्यायी संस्कृत शब्दोंवाला एक कोश तैयार करवाया । इसी को 'राज्यव्यवहारकोश' कहते हैं ।

रायगढ़

**याद करो ...**

किस भारतीय शासक ने नई कालगणना का प्रारंभ किया?

**ध्यान में रखो**

राज्यव्यवहार कोश में आए हुए कुछ प्रतिशब्द उल्लेखनीय हैं ।

जैसे-किताब-पदवी (खिताब),
फरमान-राजपत्र, जामीन-प्रतिभूति,
हाली-संप्रति, माजी-पूर्व/भूतपूर्व
फिलहाल-तत्काल (इस समय),
वाहवा-उत्तम, वकूब-प्रज्ञा,
बेवकूफ-मूढ़ (मूर्ख), दस्तपोशी-हस्तस्पर्श,
मुलाखत-दर्शन,
कदमपोशी-चरणस्पर्श, झूठ-मिथ्या (असत्य),
कौलनामा-अभय, फतेह-विजय,
फिर्याद (फरियाद)- अन्यायवार्ता (न्याय हेतु याचना करना), शिलेदार-स्वतुरगी (जिसके पास स्वयं का घोड़ा है ।)

मध्यकालीन भारत के इतिहास में शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक एक क्रांतिकारी घटना है। इस घटना के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए इतिहासकार सभासद कहता है-''मराठा पातशाह इतना बड़ा छत्रपति बना; यह कोई साधारण बात नहीं है ।''

इसके बाद शिवाजी महाराज ने अल्पावधि में २४ सितंबर १६७४ को निश्चलपुरी गोसावी के मार्गदर्शन में तांत्रिक पद्धति द्वारा राज्याभिषेक करवाया । भारत में धार्मिक विधियों की दो परंपराएँ- वैदिक और तांत्रिक प्रचलित थीं । इन दोनों पद्धतियों का आदर करते हुए शिवाजी महाराज ने इन पद्धतियों द्वारा अपना राज्याभिषेक करवाया ।

**क्या तुम जानते हो ?**

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के समय युवराज संभाजीराजे की आयु १७ वर्ष की थी । उन्होंने 'बुधभूषण' ग्रंथ में राज्याभिषेक समारोह का वर्णन किया है। यह वर्णन उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर किया है।

'छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक समारोह के अवसर पर अलग-अलग प्रांतों से जो विद्वान आए थे; उन्हें बिना तौले और गणना किए विपुल धन दिया गया । साथ ही; उन्हें वस्त्र, हाथी, घोड़े भी दान में देकर संतुष्ट किया गया ।'

इस प्रकार छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपनी कीर्ति दसों दिशाओं में फैलाई ।

**क्या तुम जानते हो ?**

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक हेतु अत्यंत मूल्यवान और भव्य सिंहासन का निर्माण करवाया गया। सिंहासन की आठ दिशाओं में आठ रत्नजड़ित स्तंभ थे । यह सिंहासन आठ मन स्वर्ण का था तथा इसमें मूल्यवान रत्न जड़े गए थे ।

- 'मन' इकाई (एकक) को गणित के शिक्षकों से समझो ।

**दक्षिण का अभियान :** राज्याभिषेक के लगभग तीन वर्षों के बाद अक्तूबर १६७७ में शिवाजी महाराज ने दक्षिण में अभियान चलाया । वे गोलकुंडा गए और कुतुबशाह से मिले । उन्होंने उसके साथ

मित्रता की संधि की । आगे चलकर शिवाजी महाराज ने कर्नाटक के बंगलुरु, होसकोट तथा वर्तमान तमिलनाडु के जिंजी, वैल्लोर आदि किले और आदिलशाह के कुछ प्रदेश जीत लिए लेकिन उनकी सेना ने वहाँ की प्रजा को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं पहुँचाया । विजित प्रदेश के प्रशासन की देखरेख के लिए प्रमुख प्रशासक के रूप में रघुनाथ नारायण हणमंते की नियुक्ति की ।

शिवाजी महाराज के सौतेले भाई व्यंकोजी वर्तमान तमिलनाडु के तंजौर में शासन कर रहे थे । शिवाजी महाराज का प्रयास था कि उन्हें भी स्वराज्य के कार्य में सहभागी करा लें । व्यंकोजी राजे के पश्चात तंजौर के राजाओं ने विभिन्न विद्याओं और कलाओं का संवर्धन किया । यहाँ का 'सरस्वती महल' ग्रंथालय विश्वविख्यात है ।

दक्षिण के अभियान में शिवाजी महाराज ने तमिलनाडु का जिंजी किला जीतकर उसे स्वराज्य में समाविष्ट कर लिया । उनके इस कार्य को भविष्य में बड़ा ही निर्णायक महत्त्व प्राप्त हुआ । मुगल शासक औरंगजेब स्वराज्य को नष्ट करने के लिए महाराष्ट्र में पाँव जमाए बैठा था । उस समय तत्कालीन छत्रपति राजाराम महाराज को अपनी सुरक्षा की दृष्टि से महाराष्ट्र से बाहर जाना पड़ा था। वे दक्षिण के इसी जिंजी किले के आश्रय में चले गए थे और वहीं से स्वराज्य का प्रशासन चलाया ।

इस दक्षिण विजयी अभियान के पश्चात अल्पावधि में ३ अप्रैल १६८० को शिवाजी महाराज का रायगढ़ में निधन हो गया । पचास वर्ष की आयु में उनका निधन होना स्वराज्य के लिए अपूरणीय क्षति थी । एक महान युग का अस्त हो गया ।

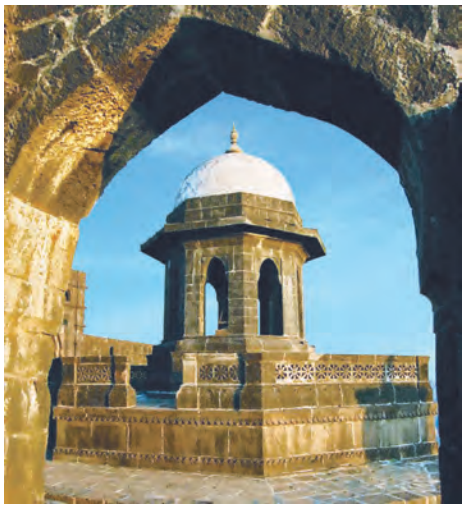

शिवाजी महाराज की समाधि – रायगढ़

## स्वाध्याय

**१. निम्न घटनाओं को कालक्रमानुसार लिखो :**

(१) शिवाजी महाराज का दक्षिण अभियान ।
(२) लाल महल पर धावा ।
(३) आगरा से निकल आना ।
(४) राज्याभिषेक
(५) पुरंदर की संधि
(६) शाइस्ता खान का आक्रमण

**२. ढूँढ़ो तो मिलेगा :**

(१) संस्कृत शब्दकोश –
(२) जिसने त्र्यंबकगढ़ को जीता –
(३) वणी-दिंडोरी में पराजित सरदार –
(४) वे स्थान; जहाँ अंग्रेज, डच और फ्रांसीसियों के गोदाम थे –

**३. अपने शब्दों में लिखो :**

(१) शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक ।
(२) आगरा से निकल आना ।
(३) शिवाजी महाराज का दक्षिण अभियान ।
(४) शिवाजी महाराज द्वारा राज्याभिषेक के लिए की गईं तैयारियाँ ।

**४. कारण लिखो :**

(१) शिवाजी महाराज ने पुरंदर की संधि की ।
(२) शिवाजी महाराज ने मुगलों के विरुद्ध आक्रामक भूमिका अपनाई ।

**उपक्रम**

(१) विद्यालय में मनाए जानेवाले स्वतंत्रता/गणतंत्र दिवस समारोह के लिए तुम क्या-क्या तैयारियाँ करते हो? शिक्षकों की सहायता से उसकी सूची बनाओ।
(२) अपने परिसर के किसी ऐतिहासिक स्थान पर जाओ और उसका प्रतिवेदन तैयार करो ।